तीन दिन तीन घर

शील और समाज की ज्वलंत समस्याओं पर आधारित एक अभिनेय नाटक

शील

लोकभारती प्रकाशन
इलाहाबाद

© शोम
प्रथम संस्करण १९६१
आवरण मीरा चौगाम रंगोली प्रयाग
मूल्य रु १
प्रकाशक लोकभारती प्रकाशन
१५ ए, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद
मुद्रक मानस प्रेस इलाहाबाद

समाजवाद के स्वप्न-द्रष्टा कवि
स्वर्गीय पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को

●

भूमिका

किसी भी साहित्यकार का रंगमंच पर प्रस्तुत किए जाने योग्य नाटक की रचना करना तथा उसे रंगमंच पर प्रस्तुत करना सदैव प्रशंसनीय कहा जायेगा। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने इस क्षेत्र में भी पहल-कदमी की यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारतेन्दु जी ने नाटकों की रचना नाट्य मण्डली का संगठन किया निर्देशन किया और नाटकों को रंगमंच पर प्रस्तुत भी किया। ३ नवम्बर १८८४ ई० को बलिया इन्स्टीट्यूट में उनके दो नाटक 'सत्य हरिश्चन्द्र' और 'नील देवी' अभिनीत हुये।

भारतेन्दु युग से अब तक हिन्दी में पाँच सौ से अधिक मौलिक नाटकों की रचना हो चुकी है। अनूदित नाटकों की संख्या भी अच्छी खासी है। यह दुःख की बात है कि नाटकों की इतनी बड़ी संख्या के रहते हुए हिन्दी का रंगमंच अविकसित ही रह गया। यह भी दुःख की बात है कि आज भी ऐसे नाटकों की कमी है जो रंगमंच पर प्रस्तुत किये जा सकें। रंगमंच का विकास अभिनेय नाटकों पर निर्भर है और अभिनेय नाटकों का विकास रंगमंच के विकास पर। दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। हिन्दी रंगमंच और हिन्दी के नाटकों का अनुशीलन करें तो इस तथ्य की और भी अधिक पुष्टि हो जायेगी।

भारतेन्दु काल से ही ऐसे नाटकों की रचना होने लगी थी जिनकी मौलिक रचना स्पष्ट थी। राजनीतिक सामाजिक धार्मिक अथवा ऐतिहासिक—इन्हीं वर्गों में नाटकों को विभक्त किया जाता था। परन्तु यह ध्यान रखना नितान्त आवश्यक था कि चाहे किसी वर्ग का नाटक हो वह अभिनेय र बरन हो। धीरे-धीरे नाटकों का प्रचार बढ़ा और पाठ्यक्रम में इन्हें स्थान मिलने लगा। इसका एक दुष्परिणाम यह हुआ कि साहित्यिक दृष्टि से नाटकों का स्तर तो ऊँचा होता गया परन्तु रंगमंच से उनका सम्बन्ध

नित्य प्रति कम होता गया। फलतः रंगमंच का विकास रुक-सा गया। नाटकों का अभिनय स्कूल-कालेजों की चहार-दीवारियों के भीतर सीमित रहने लगा। पारसी थियेटरों का स्थान लेने की जो कल्पना पूर्ण हो रही थी उसमें व्याघात पहुँचा। प्रसाद जी जिस समय अपने नाटकों की रचना कर रहे थे उस समय यह समस्या कठिन रूप धारण कर चुकी थी। स्वयं प्रसादजी ने लिखा है 'हिन्दी का कोई अपना रंगमंच नहीं है। जब उसके पनपने का अवसर था तभी सस्ती भावुकता लेकर वर्तमान सिनेमा में बोलने वाले थियेटरों का अभ्युदय हो गया। फलतः अभिनयों का रंगमंच नहीं-सा हो गया है। साहित्यिक सुरुचि पर सिनेमा ने ऐसा धावा बोल दिया है कि कुरुचि को नेतृत्व करने का सम्पूर्ण अवसर मिल गया है। उस पर भी पारसी स्टेज की गहरी छाप है।... रंगमंच की तो प्रायः मृत्यु हिन्दी में दिखाई पड़ रही है। कुछ मण्डलियाँ कभी-कभी स्थान में एकाध बार वार्षिकोत्सव मनाने के अवसर पर कोई अभिनय कर लेती हैं। पुकार होती है—आलोचकों की हिन्दी में नाटकों के अभाव की। रंगमंच नहीं है ऐसा समझने का कोई साहस नहीं करता।'

प्रसादजी के बाद जो नाट्य साहित्य देखने में आया उसमें प्रायः वही कमी थी जिसे लोग प्रसाद जी के नाटकों में कहते थे—अभिनय की अयोग्यता। परन्तु यह स्थिति बदली और धीरे-धीरे इस बात की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी कि रंगमंच का पुनर्निर्माण शीघ्रातिशीघ्र हो। युद्धजनित परिस्थिति विशेष कर बंगाल के अकाल के कारण सारे देश में व्यापक निराशा एवं असन्तोष की जो लहर दौड़ गयी थी उसकी धार से दृष्टि हटा लेना सम्भव न था। युग की समस्याओं की चुनौती की अवहेलना नहीं की जा सकती थी। इसी संदर्भ और परिवेश में 'भारतीय जन नाट्य संघ' का जन्म हुआ और अपने देश के विभिन्न भागों में रहने वाले साहित्यकारों एवं कलाकारों का सक्रिय सहयोग भी प्राप्त हुआ। सिनेमा से ऊबी हुई जनता में रंगमंच के इस अभिनव रूप का स्वागत

किया और देखते-देखते सारे देश में इस संस्था की शाखाओं का जाल-सा बिछ गया । हिन्दी रंगमंच का विकास होने लगा और रंगमंच की आवश्यकताओं को दृष्टि में रख कर नाटक रचने की पुष्ट परम्परा चल निकली । इसी समय व्यावसायिक रूप-विधान लेकर 'पृथ्वी थियेटर' का उदय हुआ । यह संस्था विशिष्ट प्रगतिशील मान्यताओं को स्वीकार कर आगे बढ़ी । फलस्वरूप देश के प्रत्येक राज्य में रंगमंच के पुनर्गठन की प्रक्रिया चल निकली । इसके साथ ही साहित्यस्रष्टा वर्ग भी इसकी ओर बरबस आकृष्ट होने लगा । आज यह स्थिति आ गयी है जब कि यह स्वीकार किया जाने लगा है कि उत्कृष्ट नाटक वही है जिसे सफलतापूर्वक रंगमंच पर प्रस्तुत किया जा सके । 'दृश्य काव्य' के रूप में नाटकों की पुनर्प्रतिष्ठा होने लगी है । इस प्रकार उस युग का सूत्रपात प्रारम्भ हो चला है जिसका सपना भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने देखा था जिसे साकार बनाने के लिए वे प्रयत्नशील थे जिसकी अपूर्णता के कारण भी अपरोक्ष प्रभाव इसी के और जो अनिवार्य रूप से साहित्यिक एवं कलाकार वर्ग के लिए चुनौती बना हुआ था ।

श्री 'सीस' कृत 'तीन दिन तीन घर' नाटक का अनुशीलन एवं मूल्यांकन इसी आधार-भित्ति पर किया जा सकता है ।

'तीन दिन तीन घर' का रंगमंच एक औद्योगिक नगर के एक मुहल्ले की एक गली में है । गली के दोनों बाजुओं के निवासी नाटक के प्रमुख पात्र हैं । 'तीन दिन तीन घर' में तीन घरों की तीन दिनों की दास्तान है । एक लम्बे समय की सामाजिक-राजनैतिक परिस्थिति का मन्थन इन्हीं तीन घरों के निवासियों और उनके बाह्य सम्बन्धों को संगठित करके किया गया है ।

नाटक में कुल १८ पात्र हैं जिनमें चार पात्र तीन घरों के निवासी हैं । शेष इनसे सम्बन्धित या बाहर के हैं । नाटक का स्थान या पात्रों का

चुनाव लेखक ने सद् साहित्यिक उद्देश्य से किया है। नाटक में तीन परिवारों की तीन दिन की दिनचर्या अलग-अलग होते हुये भी पूँजीवादी संकट और तज्जनित जन-जागरण के विरोधाभास के कारण एकमुखी हो उठी है।

तीन घरों की छोटी-छोटी समस्यायें नाटक में पूँजीवादी प्रजातंत्र की असंगतियों में पड़कर राजनैतिक समस्यायें बन गयी हैं। हमारे समाज का समस्त जीवन एक ऐसे संकट से घिरा हुआ है कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरुष बालक हो या जवान उससे मुक्त होने के लिए छटपटा रहा है। वर्तमान राजनीति उसे जनविरोधी हिलोरों पर झुला रही है।

अभी तो नाटक के एक घर का निवासी प्रभात कवि और साहित्यकार है, जो समाज के विकराल थपेड़ों के बीच साहित्यिक सत्य की रक्षा करता है। राहित मौसिमा और अपनी पत्नी माया तथा स्वयं के भरण-पोषण के लिए एक दैनिक-पत्र में नौकरी करता है।

गली की दूसरी बाजू में एक गैराज है जिसमें श्यामा महाजिन रहती है। मुहल्ले के बड़े-बड़े लोगों के यहाँ वह कुएँ का पानी भरती है। गाँव के एक जवान को भगा लायी है उसे नियुक्त कर के मिल में नौकर रखवा दिया है। चन्दू मिल का कुशल मजदूर है।

गैराज के ऊपर हीरालाल का घर है। वह कपड़े का मामूली दलाल है। पान तोड़ने वाले मुकुन्द की सहायता से बाजारें करता है। हीरालाल के कोई सन्तान नहीं है। पत्नी को हमेशा मारता-पीटता है। उसकी पत्नी ममता प्राय बच्चा होने का ढोंग रचा करती है। मुकुन्द जन्मजात विद्रूप है। टूटे-फूटे के माध्यम से बोलता है। शोभा मुकुन्द की छोटी है—पढ़ती है नये विचारों की पर नारी है। हीरालाल हमेशा प्रभात से लड़ा करता है प्रभात की वाणी से तंग रहता है मुकुन्द का पन्ना हीरालाल को और ज़िन्दगी बना देता है।

एक सेट और तीन अंकों में विभक्त तीन दिन तीन घर घटना-प्रधान

नाटक है। रूप-परिवर्तन करने वाली छोटी-छोटी घटनाओं द्वारा नाटक उतार चढ़ाव की अनेक मंजिलें पार करता हुआ क्लाइमेक्स पर पहुँचता है। प्रत्येक अंक में इस प्रकार की केन्द्रीय घटनाओं का सूत्रपात हुआ है, जो तीन परिवारों की समस्त समस्याओं को समूचे समाज का प्रतीक बना देता है।

नाटक के प्रथम अंक में मालिकों की पूर्व योजनानुसार रात में एक मिल-मजदूर को मार कर गर्द के ढेर में दबा दिया जाता है। मिलों में हड़ताल हो जाती है। बच्चू गिरफ्तार होता है। घटना का मर्म प्रकाशित करने के कारण प्रभात नौकरी से हाथ धो बैठता है। लेकिन उसी मुहल्ले का हीरालाल चौधरी दयाल के साथ मालिकों की साजिश में शामिल होकर एक रात में सम्पत्तिशाली बन जाता है।

पहिले अपनी मांगों को पूरा कराने के लिए मजदूर हड़तालें करते हैं। लेकिन दूसरे अंक में पहुँचते-पहुँचते मिल-मालिक अधिक मुनाफा बटोरने के लिए छटनी-बन्दी करने लगते हैं। मजदूरों के विरुद्ध विद्रोह छेड़ देते हैं उन्हें बदनाम करने के लिए मिलों में विस्फोट कराके राष्ट्रीय पूंजी नष्ट करते हैं। मजदूर कामचोर करार हो जाते हैं। प्रभात गरीब जनता का साथ देता है। बेकारी की मार से पीड़ित प्रभात को आत्मा बेचने के लिए विवश किया जाता है किन्तु प्रभात टूटते-टूटते संभल जाता है। हीरालाल मुहल्ले का ही नहीं समाज का गणमान्य बन जाता है।

तीसरे अंक में समाजवादी संघर्ष राष्ट्रीयकरण की मजबूत भूमिका को समझने के लिए देशी विदेशी पूंजीपतियों के मिले-जुले षड्यंत्र का सूत्रपात होता है। पंचवर्षीय योजना को रद्द करने के लिए एक एक ... द्वारा कमेटियों में चाँदी-सोने के बाजारों का राष्ट्रीकरण करने का प्रस्ताव रख दिया जाता है। छोटे-छोटे व्यापारी इस हरकत से दहल उठते हैं। छोटी-छोटी मालकिनें को बड़ी-बड़ी सम्पत्तियाँ नीलाम को तैयार हो जाती हैं। प्रभात बच्चू और उनके साथी समझदार

इन सभा नाविकों से जनता को आगाह करते हैं। जनता बहुत अच्छी है, पुलिस धर्मप्रचारिकों को गिरफ्तार कर लेती है—विद्रोह पर काबू पा लेती है।

उपर्युक्त घटना-वैचित्र्य के कारण तीन वर्षों का सामाजिक काल प्रस्तुत नाटक में सहज और स्वाभाविक रूप से एक ऐसे ऐतिहासिक प्रभाव में परिणत हो जाता है जिससे राष्ट्र के उमड़ते हुए नये सत्य का आभास होता है।

नाटक में एक प्रवाह है, गतिशीलता है जिससे कथानक में प्रभावोत्पादकता आ जाती है और दर्शक रोमांचित एवं अवाक् रह जाता है। घटनाओं की परिणति इस प्रकार होती है कि दर्शक का हृदय आन्दोलित हो उठता है और उसका मस्तिष्क कुछ सोचने-विचारने के लिए विवश हो जाता है। नायक और उपनायक के असली व्यक्तित्व का उद्घाटन तो होता ही है, नाटक का मौलिक संदेश भी उभर कर सामने आ जाता है—अश्रु-स्वेद रक्त से लथपथ संघर्षमय जीवन का विजय-मंडित उज्ज्वलतम भविष्य भी निखर कर सामने आता है।

तीन दिन तीन घर अभिनय दृष्टि से अभिनेय नाटक है। इसका साहित्यिक रूप सुन्दर और पुष्ट है। नाटक और रंगमंच प्रेमियों के लिए कलाकार लाल की यह अनुपम भेंट है। निश्चय ही नाटक मण्डलियों में यह नाटक समादृत और लोकप्रिय होगा।

१ सी० मिन्टो रोड
इलाहाबाद।
१-९-६१

— श्रीकृष्णदास

नाटक के सम्बन्ध में

रंगमंच का ज्ञान और नाटक लिखने की प्रेरणा मुझे श्री पृथ्वीराज कपूर और 'पृथ्वी थियेटर' के प्रमुख कलाकारों के समय में प्राप्त हुई है। इसके लिए मैं सदा उनका कृतज्ञ रहूँगा। 'तीन दिन तीन घर' मेरा पहला नाटक है। इसकी रचना बम्बई प्रवास के समय तीन रातों में हुई थी। एक-एक अंक करके मैंने तीनों अंक 'पृथ्वी थियेटर' में सुनाये। सब ने प्रशंसा की। नाटक स्टेज का बन्दोबस्त हो गया। रोल बँट गये रिहर्सल होने लगा। 'पृथ्वी थियेटर' के दक्षिण भारत भ्रमण के समय नाटक पर काम बन्द हुआ। १९५१ में इसका प्रदर्शन होना था—पृथ्वीराज प्रधान की भूमिका में उतरने की तैयारी कर रहे थे।

इसी बीच पृथ्वीराज एक सांस्कृतिक शिष्ट मण्डल के साथ चीन जाने के लिए तैयार हो गये। 'तीन दिन' के प्रदर्शन के सम्बन्ध में मेरी उनसे बातें हुईं तो मुझे नाटक के दृष्टिकोण और विचारों के सम्बन्ध में कुछेक मतभेद दिखाई दिये। पृथ्वीराज प्रधान का रोल पाकर सन्तुष्ट न समझते थे। क्योंकि नाटक किसी एक मुख्य पात्र के नहीं—घटनाओं के इर्द-गिर्द घूमता है। पात्रों को कुछ अपने विचार भी रखने थे। इनका समावेश कैसे हो मेरे सामने एक बड़ा प्रश्न था। फिर कुछ अन्य प्रमुख नाट्य मान्य के प्रदर्शन में गतिरोध का कारण बने थे।

इसी अवधि में मैंने 'ज़मीन' नाम से एक दूसरे नाटक की रचना की। चीन से वापस आने पर पृथ्वीराज को मालूम हुआ और मैंने उन्हें नाटक सुनाया। 'ज़मीन' के पात्रों को उन्होंने अपने लिए अनुकूल पाया। मैंने कहा कि आप इसी को करिये। और 'पृथ्वी थियेटर' द्वारा 'ज़मीन'—'किसान' के नाम से देश के कोने-कोने में प्रदर्शित तथा भंडार प्रकाशन [illegible] द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

नाटक बड़े रंगमंच के लिए लिखा गया है पर इतना सरल है कि इसे मात्र थोड़े धन और संगठित परिश्रम से सफलता पूर्वक खेल सकते हैं। सहजसुन्दर घटनाएँ और सम्वाद अभिनेताओं को रंग-मंच की योग्यता प्रदर्शन करने की प्रेरणा देंगे। प्रस्तुत नाटक को रंगमंच पर प्रस्तुत करने वाले बन्धु अगर सूचना रिपोर्ट और चित्रादि हमें भेज सकेंगे तो हम उनके आभारी होंगे।

अन्त में मैं भाई श्रीकृष्णदास जी का आभारी हूँ—जिन्होंने प्रकाशन से पूर्व इस नाटक को पढ़कर दो शब्द लिखने की कृपा की है।

१ ६ ५१
बा पो पानी —शील

रोहित : (मुंह बना कर उठता है, लाठी पकड़ कर) अच्छा चला ।

[रोहित मामी की लाठी पकड़ कर अन्दर जाता है । द्वार खुलने पर बालिका बायें से बायें जाती दिखाई देती है । नेपथ्य के अन्दर से श्यामा टीन का द्वार भड़भड़ाती है ।]

श्यामा : (अन्दर से) रोहित की अम्मा दरवाज़ा खोल दो कोई दरवाज़े की जंज़ीर चढ़ गया है मैं अन्दर हूँ । (द्वार भड़भड़ाती है ।) रोहित आ रोहित मेरी जंज़ीर खोल दे, (थोड़ा रुक कर) बदमाश निठल्ले कहीं के (रुक कर) रोज़-रोज़ यह मज़ाक अच्छा नहीं ।

[टीन की आवाज़ सुन कर शोभा ऊपर से झाँक कर देखती है । उसके सर के धुले बाल सुखे हुए लहरा रहे हैं ।]

शोभा : क्या हुआ श्यामा ! आज फिर कोई जंज़ीर बन्द कर गया !

(जीने से उतर कर द्वार खोलती है ।)

श्यामा : पता लग जाए तो मुए को अभी सुनाऊँ कि सुनते न बने ।

शोभा : रोज़ का पर पता कैसे लगे ।

श्यामा : मैं समझती थी कि चन्दू मज़ाक कर रहा है पर वो अभी आया ही नहीं । मैं चन्दू के भरोसे में रही । न जाने कौन है जो मुझसे जलता है । (रुक कर) मैं श्यामा हूँ श्यामा । पकड़ पाई तो सात पुश्तों तक को तार दूँगी ।

[जेब से बीड़ी निकाल कर सुलगाती है । अन्दर से हीरालाल शोभा को आवाज़ देता है । हीरालाल नंगे बदन कन्धे पर धोती डाले है। श्यामा कमरे, रस्सी और पिण्डी निकाल कर बाहर रखती है ।]

हीरालाल : (ज़ोर से) शोभा (झाँक कर) ओ शोभा ।

शोभा : आई भइया, आज फिर कोई श्यामा का दरवाज़ा बन्द कर गया था । (अन्दर जाते हुये) जान कौन है जो रोज़-रोज़ बेचारी को परेशान करता है ।

हीरालाल : राह का घर किस पर शक किया जाय ।

श्यामा : (धोती के पल्लू कमर में खोंसती हुई) पंडित जी की चोरी निहुरे-निहुरे कब तक चलेगी ? एक दिन अन्दर पकड़ी जायी ।

हीरालाल : (मुसकराते हुये) कोई तुम्हारा चाहने वाला है ।

श्यामा : (हार बन्द कर धोते उठाते हुए) चाहने वाला है तो सामने आन से क्यों डरता है ?

हीरालाल : कोई बड़ा खिलाड़ी है ।

श्यामा : खिलाड़ी नहीं, मुजरिम है बेईमान कहीं का ।

[बीड़ी की कश लगा कर शेष टुकड़े को पैर से बुझाती है और रस्सी कन्धे में डाल तीसरा पट्टा उठा कर पीछे की पत्तो को चली जाती है । पीछे पाइप पर शोर हो रहा है । हीरालाल झाँक कर देखता है । पोंछित बालक आकर फिर करवट बदलने लगता है । हीरालाल अनुपम पोंछिन को देखता हुआ अन्दर चला जाता है । उतरा दोनों ओर मुकुन्द नंगे बदन शाल व कमीज़ पहने मन में मोनी दयाल की माला डाल हाथ में लम्बी डाबुर घुमाता गाता हुआ सामने की गली से आता है ।]

मुकुन्द : (ट, ड, ड, ड, के माध्यम से) मन्द दा दिनदम, मद दा दिनदम दा दिनदम, मद मृ मद ।

हीरालाल : (नाराज होकर) कहाँ घूम रहे थे, जाओ जल्दी दूध ले आओ।

मुकुन्द : (भाई के भौंहों के बल को ताड़ कर) अच्छा जाते हैं।

[हीरालाल से बाल्टी लेकर पीछे पलट कर सामने की गली की ओर चला जाता है। हीरालाल पाये पर उद्विग्न सा टहलता है। चोटी को उँगली से ऐंठता है। शोभा बाहर आती है।]

हीरालाल : शोभा!

शोभा : (रुक कर) आई भइया!

(वापस आती है)

हीरालाल : शोभा तू अपनी भाभी से कह दे कि वह अपने माँ-बाप के घर चली जाये।

शोभा : (विस्मय के साथ) क्यों भइया?

हीरालाल : यों ही।

शोभा : उनके तो बाल-बच्चा होने को है।

हीरालाल : बाल-बच्चा नहीं तो पत्थर होने को है।

([illegible] चोटी ऐंठता है)

शोभा : नहीं भइया मैं सच कहती हूँ।

(कमला बात सुनकर बाहर आ जाती है)

कमला : क्यों जाऊँ माँ-बाप के यहाँ यह मेरा घर नहीं है। और फिर तुम्हारे साथ ७ भाँवरें जो फिरी हैं।

(शोभा अन्दर चली जाती है)

हीरालाल : (घमंड उतार कर पिटे हुए स्वर में) पर यहाँ तुम गुजारा न होगा।

कमला : क्यों न होगा कहीं मैं किराये का हूँ जो मेरा गुजारा न होगा ।

हीरालाल : जबान न लड़ा कर दिया, सीधे अपने माँ-बाप के घर चली जा ।

कमला : जैसे अब तक गुजारा हुआ है वैसे ही

हीरालाल : (बात काट कर) अब तक हो गया अब नहीं हो सकता ।

कमला : मुझे माँ-बाप के घर भेज कर घर में मेरी सौत लाकर बिठाना चाहते हो । यह मैं जीते जी नहीं देख सकती ।

(रोने लगती है)

हीरालाल : वाह तिरिया चरित्र न दिखा । जा यहाँ अन्दर जा कर अपने खोटे भाग पर सर पटक ।

कमला : (रोते-रोते) यह मेरा भाग्य न होता तो तुम्हारे जैसे के पल्ले क्यों बाँध दी जाती ।

हीरालाल : (बड़बड़ाता हुआ) तो मैं खोटे भाग्य का हूँ । (अदा कर) चुड़ैल मुझे खोटे भाग्य का कहती है । दोनों जून पेट भर का मिल जाता है न । (कमला के सर के बाल पकड़ कर) मैं खोटे देती है न बच्चे मेरे भाग्य का कहती है । अब इसी सब एक धक्का एक थप्पड़ । दर दर घूमती है चुड़ैल कहीं की ।

[कमला का रोना सुन कर सोना चौंकती है । मकान के पट से मौसिया निकल आती है ।]

हीरालाल : सचमुच कुछ है क्या ?

कमला : (वापस आ कर) नानी मैं ढोंग करती हूँ।

हीरालाल : ऐसा कितनी ही बार हो चुका है।

कमला : मैं भगवान के लिए क्या करूँ ?

हीरालाल : इसमें भगवान का क्या दोष है। भगवान इसमें क्या करेगा ?

कमला : भगवान न रूठे होते तो भला अब तक मैं बाँझ बनी रहती। कितनी बार कहा कि तुम

हीरालाल : मैं क्या ?

कमला : तुम कुछ नहीं मैं बाँझ हूँ दोष तो हर तरह बाँझ का है। बात सही हो बात गलत हो।

हीरालाल : (चिढ़कर) शरम नहीं आती—चल अन्दर—

[कमला को अन्दर कर बाहर झाँक कर पीछे स्वयं चला जाता है। हाथ में कुछ पुस्तकें और अखबार लिये हुए पीछे की गली से प्रभात प्रवेश करता है। रोहित को करतब बनाने में लीन देखता रहता है।]

प्रभात : भई यह क्या बना रहे हो ?

रोहित : (सर उठा कर) पिता जी यह घर—

प्रभात : (झुक कर रोहित का सर चूमते हुए) बड़ा अच्छा है कितना शानदार है।

(कागज मेज पर रख देता है)

रोहित : (कागज गिनते हुए) एक—दो—तीन—अभी खिड़की बनाना है। हम सब लोग इसमें रहेंगे।

प्रभात : यह तो बहुत छोटा है।

तुम्हारे हाथ मर द्सा हूँ ? लेकिन तुम हो कि हर दम मेरे लमक होने को कासा ही करती हो। मैं तुम्हार मैंह मे इस प्रकार की बातें कई बार सुन चुका हूँ। नालिमा—कला बाजार में नहीं बिकता, आदमी क हृदय में निवास करती है। कला का जन्म जीवन की मर्मगतियों में हुआ है। मेहनत ने गीत दिये गातों ने भाषा दी जिस आदमी का स्वभाव भी नहीं खरीद सका। नीलिमा, मुझे रचना की कीमत न चाहिये। रचना दश का सौन्दर्य है।

नीलिमा : तो फिर क्यों बार बार प्रकाशक के पीछे दौड़ते फिरते हो यह सो एक हजार क बदल पाँच हजार दाय चुका। तुम्हें रचना की कीमत न चाहिये, उसे चार सौ बीस करने की अभ्यत नहीं।

प्रभात : यही तो जीवन और कला क बीच असामंजस्य है। काश तुम इसे समझती।

नीलिमा : मैं नहीं समझती तो कोई समझदार ले आओ।

प्रभात (मुस्करा कर) हम, यह दम, तरी माँ कह रही है कि तेरे लिए दूसरी माँ ले आऊँ।

गोदिल हाँ पिता जी, अच्छी माँ लाना—बड़ी सी गोरी, गोरी।

नीलिमा सो बड़ी मैं भी स्वीकृति द दी।

(बाहर से किसी की आवाज आती है)

पाता । हरी के पास शक्कर, नोन, तेल का कन्ट्रोल था, कितने गरीबों के गले काटे हैं उन्होंने ? —क्या तुमसे छिपा है ?

हीरालाल : (हेले में रस्सी बांधते हुए) प्रभात जी ईमानदारी का जमाना नहीं । हम अगर आपकी तरह सोचें तो जिन्दा रहना मुश्किल हो जाय । यहाँ दुकान चलाने के तरह तिकड़म करने पड़ते हैं । हम तो एक मिनट भी ईमानदार नहीं रह सकते ।

[बीतिमा अन्दर जाती है, रोहित मानो की लाठी पकड़े भागम् की तितली पकड़ता जाता है ।]

प्रभात : आप ईमानदार नहीं तो इसके माने यह नहीं कि सारी दुनियाँ बेईमान है ।

हीरालाल : तो आप मुझे बेईमान समझते हैं ।

प्रभात : यह तो आप ही कह रहे थे—पेशा तो आपका बेईमानी का ही है ।

हीरालाल : (नाराज होकर) आज कौन-सा ऐसा पेशा है जो ईमानदारी का है ।

प्रभात : हीरालाल जी—आपको अपनी ही बात लग गयी ।

हीरालाल : यानी मियाँ की जूती मियाँ के सिर—

प्रभात : आप उलझ गये आपने ही कहा था कि हम तो एक मिनट भी ईमानदार नहीं रह सकते, मान गए कि आप बेईमान हैं ।

हीरालाल : (ऐंठ दिखाते हुए) अगर ईमानदारी बरतें तो

[थोड़ी देर पहले की घटना कमला की आँखों में छा जाती है। वह अपनी सारी वेदना श्यामा को सौंपकर अपने मन को ढाढ़स देना चाहती है।]

कमला (रुंधे कण्ठ से) तुम्हारे सिवा यहाँ मेरा कोई नहीं श्यामा। तुमने दुनियाँ देखी है, मेरी मुसीबत समझ सकती हो।

श्यामा : मैं अभी आयी बहू जी—तुम चिन्ता न करो।

[धीरे धीरे श्यामा गली से निकल जाती है। कमला का भारी हृदय रो उठता है। निराशा और आत्मग्लानि के सागर में डूबती-उतराती हुई कमला की व्यथा गीत बन कर निकल पड़ती है।]

गीत

गरज-गरज कर बरसे बादल,
बिजली टूट पड़ी,
हाय जीवन-बगिया उजड़ी।
दुख की नागिन फन फैलाये,
काली रात न राह दिखाये,
दुश्मन बनी आँधियाँ मेरे,
सर पर मौत खड़ी।
हाय जीवन-बगिया उजड़ी। गरज-गरज
किससे पूछूँ किसे बताऊँ,
किसको दिल की व्यथा सुनाऊँ,
गा न सकी, टूट गयी गीत की,
टूटी हुई लड़ी।
हाय जीवन-बगिया उजड़ी। गरज-गरज

झूठी दुनियाँ झूठा सपना,
किस से कहूँ काल है अपना,
मुझको अब मरे आँसू हैं,
हारिल की लकड़ी,
हाय जीवन-बगिया उजड़ी। गरज-गरज

[गीत समाप्त होते ही कमला कोने की अपनी कोठरी से निकले दरवाज़े के खम्भे से लिपट कर फफक-फफक कर रोती है। सामने की गली से श्यामा आती है, अपने घर जाना चाहती है। कमला को रोते देख दीनता के साथ कोने पर चढ़ आती है।]

श्यामा (कमला को हिला कर) क्या हुआ बहू? फिर पण्डित ने कुछ कहा है? (कोई उत्तर न पा कर) इन बड़े लोगों के यही हाल हैं।

कमला : (सर उठा कर) श्यामा, चाहे छोटे हों चाहे बड़े, औरत हर जगह औरत ही है। उसे पशु की तरह जहाँ भी खूँटे में बाँध दो, बँधी रहेगी। बेज़ुबान है।

श्यामा : वह ज़माने गए बहूजी, जब औरत को आदमी जानवर से बदतर समझते थे, नए ज़माने की औरतों का तो दमा—मर्दों को चुटकी पर नचाता है। तुम सीधी-सादी हो इस लिए पण्डित तुम्हें डाँट-डपट लेते हैं। आज फिर कुछ　।

कमला : शामा से कह रहे थे कि मार्मी न कर दो अपने माँ-बाप के यहाँ चली जाय। तुम्हीं बताओ श्यामा—मैं कैसे चली जाऊँ? (रो कर)

लोग कहेंगे कि निपूती है, इस लिए मरद ने निकाल दिया है। (रुक कर) तुम कह रही थीं कि पंचमढ़ी के बाबा तावीज देते हैं। श्यामा मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ। जतन कर दो, किसी तरह निपूती के कलंक से बच जाऊँ।

श्यामा : मैं जो कुछ कर सकूँगी जरूर करूँगी, पर यह भी बाँझ के लिए तो भगवान् भी कुछ नहीं कर सकता।

कमला : भगवान् कसम मैं बाँझ नहीं हूँ श्यामा! बेजुबान हूँ। आज उन्हें फिर विश्वास हो गया है कि ।

(सरमा जाती है)

श्यामा : मुझे भी लगता है कि मन का भाव नहीं है।

कमला : (पाँच रुपये का नोट देते हुए) लो इसे, बाबा का तावीज ला दो। एक बार घर का मुँह देख लूँ। श्यामा, सुना है कि वह ब्याह कर रहे हैं। मेरा तो दिल ।

श्यामा : हाँ यह जी, तुम्हारा दिल कोई पत्थर का थोड़े है। भला कोई औरत सर पर सवत बिठा सकती है। मुझ ही देखो कि चन्दू की चिट्ठी आती है तो मेरा दिल धड़कने लगता है। वह रुपया रहने दो, रुपया लेकर क्या करूँगी? बाबा के यहाँ तो तुम्हें चलना पड़ेगा। सुना है कि वह अपने हाथ से तावीज बाँधते हैं।

कमला (धीरे से) तुम जो कुछ कहोगी करूँगी।

श्यामा : मैं पहले अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर लूँ, ताकि किसी तरह का धोखा न हो।

कमला हाँ श्यामा, जल्दी ही करो।

श्यामा (बीड़ी सुलगाती हुई) आज ही पता लगाऊँगी। चलूँ अभी पानी भरने को पड़ा है।

[श्यामा चीने से उतर कर अम्मी के पास जाती है। कमला अन्दर जाती है। श्यामा बीड़ी को कश खींच कर धुआँ छोड़ती है। उससे मन भर जल देती है। धुआँ लगने से अम्मी मुँह बनाती है। उठ कर बैठ जाती है।]

अम्मी (मुँह में हाथ डाले हुये) यह मुझे नहीं अच्छा लगता। तू न जाने कैसे पीती रहती है दिन-रात।

श्यामा (रुक कर) चाची इसे न पियूँ तो जिन्दा कैसे रहूँ? सीना फट जाता है, पानी लेकर सीढ़ियों पर चढ़ते-चढ़ते। चाची, यही ही तो एक सहारा है।

[घड़े लिये नली को जाती है। अन्दर से प्रकाश कपड़े पहिने मोनिका से कुछ कहता हुआ प्रवेश करता है।]

प्रकाश : मैं पारस के घर जा रहा हूँ। उन्हें यहाँ अब-तक आ जाना चाहिये था, आये नहीं।

[अम्मी की ओर से जाते-जाते वापस आकर मेज की दराज से कुछ निकाल कर पढ़ने लगता है। मोनिका बाहर अम्मी की ओर जाकर प्रकाश को देखती है।]

मोनिका : घर चल गये! (प्रकाश टेबुल पर बैठ कर कुछ

लिखने लगता है। नीलिमा वापस लौटती है।)
आह! मोहलत भी नहीं, मैं ऊपर देखने गयी थी।

प्रभात : आते आते कुछ याद आ गया।

[फिर लिखने लगता है। नीलिमा उसके पास आ कर पीछे कुर्सी पकड़ कर खड़ी हो जाती है। प्रभात के कन्धे की ओर झुक कर पढ़ती है।]

नीलिमा : खूब-खूब कितना सुन्दर चित्र है। (सामने का पेपर उठा कर पढ़ती है। प्रभात नीलिमा के हाथ से पेपर लेना चाहता है।) रुको-रुको ज़रा, अभी देती हूँ। (मुस्कराती पढ़ती है) खूब-खूब बड़ा अच्छा अनुभव है पर घर का नहीं, बाहर का है।

प्रभात : इस समय घर बाहर की बात रहने दो। इसके मारे तो कुछ आगे लिखना था भूल गया।

नीलिमा : फिर आ जायेगा।

[प्रभात पेपर लेकर पढ़ता है और तेज़ी से लिखने लगता है। नीलिमा अपराधी की तरह खड़ी देखती है। प्रभात आगे की लाइनें पूरी करके पढ़ता है।]

प्रभात : लग लो मुझे हुए घाम की तरह
सपनों का बापू मग
थका मांदा, ऊबा, टूटा,
अपने मासूम बच्चों की निगाहों में भग
गलियों में मरा मरा, घर का मौन रहा,
कहीं किनारा न मिले

तेल, नमक, लकड़ी, की
जिनन मजदूर की मेहनत के रजिस्टर भर कर
मालिकों के मकानों का हिसाब किया
और बाज़ार के मुनाफ़ों का लिखा—
(आगे सोचने लगता है)

नीलिमा : और यह भी लिखिए कि बीबी-बच्चों की ज़रूरतों पर ताला लगा दिया।

प्रभात : (लेखनी रख कर) हाँ नीलिमा इस पढ़-लिखे तबके की यही हालत है कि मेहनत बेचता है और अपने को मज़दूर कहने में शरमाता है।

[प्रभात के दोस्त डाक्टर पारस का प्रवेश। पारस चलते-चलते प्रभात के अन्तिम शब्द सुन लेता है।]

पारस : (हँसने का प्रयत्न करते हुए।) कौन शरमाता है?

प्रभात : (मुड़ कर) आइए डाक्टर साहब, इसी बाबू तबके के बारे में बात-चीत हो रही थी।

पारस : इस तबके की यही हालत है, जिसके रोने में आवाज़ नहीं होती और आँसुओं में ।

प्रभात : आग दहकती है।

पारस : क्या खूब! आपको तो आँसुओं में भी आग दिखाई देती है। यहाँ तो कभी-कभी अपनी ही बेबसी पर इतना पछताना पड़ता है कि गला रुँध जाता है आवाज़ नहीं निकलती, आँसू निकलने के पहले ही सूख जाते हैं। आग कहाँ से दहकेगी?

प्रभात : (गौर से पारस को देख कर) क्या है डाक्टर ! तुम इतने परेशान क्यों हो ? यह सब कैसी बातें कर रहे हो ? क्या हुआ—

पारस : भाई, हमारा तो जीवन बुरी तरह उलझ गया है। दिन-रात कलह, चिन्ता । न रो पाता हूँ न हँस पाता हूँ ।

प्रभात : (हँसते हुए) मालूम पड़ता है, आज मेम साहब की लड़ाई पड़ी ।

पारस : मेम साहब तो दाँतों का पीपल बन गयी हैं। सच कहता हूँ प्रभात, अगर किसी गाँव की लड़की से शादी करता तो सुखी रहता—इनके तो दिन-रात अप्वाइन्टमेन्ट होते रहते हैं। आज मैंने कहा कि मुन्नी की हालत खराब होती जा रही है। बस, बरस पड़ीं। मैं यहाँ बच्चा खिलाने के लिए आयी हूँ। (नौकरानी दोनों में उँगली दबाये खड़ी है। प्रभात गहरे विचार की मुद्रा में सुन रहा है। पारस कह रहा है।) मैं कालेज में जा कर लेक्चर दूँ या मुन्नी का टब्बू। नौकर-नौकर है—कुछ समझ में नहीं आता ।

प्रभात : डाक्टर साहब आप तो मनोविज्ञान के मास्टर हैं। मेम साहब अभी नयी-नयी आयी हैं।—अभी लापरवाही की उम्र है। आप का तो—

पारस : लापरवाही ही तो हमारे घर में झगड़े की जड़ है मेम साहब आर्मी की गुनाह देने के पहले

लिपिस्टिक खरीदती हैं। मैं बीच में बोलता हूँ, तो तीन कोने का मुँह बना कर कहती हैं— सोसाइटी मीट करनी है जी। प्रभात तुम मजे मज़ में हो—तुम्हें नीलिमा मिली।

प्रभात : तो तुम्हारी तारीफ कर रहे हैं। हाँ, आज मुझे मेघनाथ की ड्यूटी करनी है। चला चलें। (रुककर) मैनिक्यिट लेते चलें।

पारस : और नहीं क्या ? यहाँ तस्वीर खिचवानी है। पर्मामेन्ट काम मरा जायगा।

प्रभात : अच्छा मैं लाता हूँ।

[अन्दर जाता है पारस मेज पर रखे पेपर पढ़ता है। प्रभात को आते देख]

पारस : नयी इमारत, क्या उपन्यास है ? बड़ा अच्छा नाम है। कितना लिख चुका है ?

प्रभात : काफी लिख गया है। इसकी प्रेरणा रादिल से मिली थी। प्रेरणा के लिए तो काई-न-काइ सूत्र चाहिये। आधार तो फिर मिल ही जाता है। किसी दिन पुग्मन म सुनाऊँगा। हाँ, मठनाथ म आपने बात कर ली है या नहीं बकार जान म क्या फायदा ?

पारस : बातचीत मुझसे हो चुकी है, पाँच सौ में आपी राइट लन का तैयार है।

प्रभात : कुल पाँच सौ—आह ! क्या करूँ मजबूर हूँ, नहीं तो जाने का जी नहीं चाहता। इतने बड़

जाते हैं—अम्मी चारों ओर दोनों हाथों से कुछ खोजती हुई)

अम्मी : मालिमा—नीलिमा, क्या हुआ । मैं कुछ नहीं समझ सकी । राहिल बाहर तो नहीं है ।

नीलिमा : राहिल यहीं है माँ । मिल में किसी मजदूर की लाश निकली है ।

अम्मी : (अपना सिर हिलाते हुए मुँह घुमाकर) मार डाला होगा । मेरे ब्याह के साल यहीं शहर के एक मिल में झगड़ा हुआ था अंग्रेज ने तमाम मजदूरों को बैरक में फुकवा दिया था ।

हीरालाल : हाँ, चाची मुझे भी याद है—मैं छोटा था । इसी शहर का किस्सा है । हमारे गाँव का भी एक आदमी बाइलर में झोंक दिया गया था । (और चलते-चलते रुकता से) अब दो-चार दिन के लिए बाजार गया ।

अम्मा : आज तो ऐसा ही धन्धा है ।

[अम्मी अपनी लकड़ी उठा कर नीलिमा के साथ अन्दर जाती है—मोती गली से आता दिखाई देता है । मोती सीढ़ियों से ऊपर के कमरे लेकर आता है ।]

हीरालाल : (दबी हुई आवाज से) मजदूर को मार कर रह के डर में दबा देना कोई बड़ी साजिश है ।

मोती : (सीढ़ियाँ चढ़ते हुए) साजिश ही सही । हमें तुम्हें क्या लेना-देना है ! (आखिरी सीढ़ी पर पहुँच कर हीरालाल की बाँह पकड़ लेता है) सुना इधर ।

हीरालाल : (चुप रहता है—मोती कान में कुछ कहता

(*व्यंग भरी हँसी से*) मत्म मारन रहेंगे। जहाँ इन्तजाम होना है, हो जायगा। मैंने पचास गाँठों का सौदा कर लिया है। तुम्हारे साथ साझा किया है सो उसे चलाऊँगा भी। डरते आओ, अभी क्या हुआ है।

होरालाल (खुश होकर) गाँठों में क्या-क्या है?

गोपी यही पापलीन मलमल डोरिया चिकन, जनाने मर्दाने आइ और क्या चाहते हो। देखो, इस मल का। इस वक्त शहर के सब ठेकेदार मिल के फाटक पर हैं। इन से कह दो। (*गोपी होरालाल के कान में कुछ कहता है। होरालाल गोपी से बात कर कुछ कहता है। श्यामा ऊपर आ रही है, सभी तक नीचे से सब सुन रही थी।*)

श्यामा : बाबू क्या हुआ। जान मेरा चन्दू कहाँ है? मैं मना करती रही, नहीं माना।

(*कमला दरवाज़े से निकल कर पास ही खड़ी आ गयी है*)

गोपी (श्यामा से) वह तो लीडर है।

(*होरालाल और गोपी जाते हैं*)

कमला : (श्यामा से) क्या हुआ श्यामा?

श्यामा : (दोनों हाथों पर हाथ रख कर) मरे यह मिल वाले। मुझे तो फाँसी मिले तो ठीक हो। गरीबों का खून पी पीकर मोटे हो गये हैं।

कमला : (उधर बढ़ नियमी सोढ़ियों पर आ जाती है।) सब मिल वालों को फाँसी क्यों मिले? काम वालों का मता निकलना चाहिये और फिर सभा

नीलिमा : क्या चोट लग गयी ?

कमला : माई छूट गया था। मने रोका नहीं माना, मार में आय—

(कमला नीलिमा को पास प्रमगुनो कर)

सुनेंगे भी नहीं। मुझ क्या जरूरत थी। माई छूट गया था। फिर ढूँगी नहीं माना। मैं क्या करूँ। (और तेज़ी स हार कर कर मगर हो जाती है)

भाभी : क्या हुआ नीलिमा बहन क्यों लड़ गये देवर भौजाई।

नीलिमा : इन लोगों का तो ऐसा ही लगा रहता है। मुकुन्द बेचारा निरा बच्चा है यह देवा जी उस पर हर दम सवार रहता है। भाई कोई परवाह नहीं करता, ये उसकी चमची म फायदा उठाती रहती हैं। ज़रा-ज़रा-सी चीज़ के लिए लड़ाती हैं।

[कमला जैसे चम्पर से सुन रही थी। हार ओम संभाली हुई बेर संभालती, दूसरे को पास्सो तीड़ी पर पा कर हाथ मलती हुए]

कमला : यहीं हिमायत करता हो। उसके गुन मैं जानती मैं सब काम लेती हूँ आप कौन होता है ? गुहन देखने के लिए नहीं है।

नीलिमा : म कब कहती हूँ कि तुम उसको गुहन देगा। लेकिन वह मुकुन्द ऐसा है कह गर नहीं है। भगवान् ने उस ऐसा ही बनाया है।

कमला : तो हम क्या करें, भगवान् ऐसा मान को नहीं

जो आ जाती हैं। कई लोग अपना अखबार पढ़ते हैं हाकर चिल्ला जाते हैं। एक-एक अखबार में कई कई लोग देखते हैं, कुछ मुंह बाये खड़े हैं।]

१–आदमी भाइ आर मार स पड़ा।

२–आदमी हाँ भाई—अख़बार म सच्ची बात का पता चल जायगा।

(एक आदमी पढ़ता है)

आदमी : स्थानीय टुबा मिल में रात को दो बजे एक मजदूर मार डाला गया। उस मजदूर का नाम हरखू था। कहते हैं कि हरखू अपने साँचे में काम कर रहा था। मैनेजर का चपरासी—उसे मैनेजर के यहाँ बुला ले गया फिर हरखू वापस न लौटा। जिस मजदूर को वह अपना साँचा सौंप गया था—उसने दूसरे मजदूरों से कहा, बात फैली—खोज-बीन शुरू हो गयी, हरखू का पता न था। मजदूरों ने अन्दर हड़ताल कर दी—हजारों मजदूर बाहर निकल आये सीधे टुड़ के ढेर के पास भून के दाग मिले। मजदूरों का शक पड़ गया। टुड़ के ढेर को उलटने पर हरखू की लाश निकल आयी। कहते हैं कि हरखू का खून किया गया है। कहते हैं इस खून के पीछे बड़-बड़े मिल मालिकों की साजिश थी। पुलिस और जनता की आँखों में धूल झोंक कर दिया लाश निकालने के लिए यह षड्यन्त्र रचा गया था। इस घटना से शहर के सब बाजार बन्द हो गये हैं। नतीजा क्या होगा

गोपी : दोनों धर्मियों के लोग हरखू की सड़ी लाश पर अपना अपना दावा करने लगे थे और समझते थे कि शहर में इन्कलाब कर देंगे, मैंने कहा था म। जहाँ इन्कलाब होना है हो जायगा। क्यों भोला गा गया न भाई विल्लो-चन्दर वाला किस्सा तो जानते ही हो अँग्रेजों ने हमें सब सिखा दिया है। सारा शहर तमाशाई था। पुलिस अधिकारी मारे-मारे फिरते थे।

श्यामा : (बाहर निकल कर पीछे से) तो हरखू को जिसने मारा है उसका क्या होगा।

गोपी : (मोड़कर) उसे किसी ने नहीं मारा बुखार था पेशाब करने को निकला, पैर फिसला मुँह के बल गिरा—हार्टफेल हो गया।

हीरालाल : मगर अखबार में तो

गोपी : अखबार तो लिखते ही रहते हैं। अभी तुम आकर सोओ—मैं भी चला।

[गोपी उठ कर चलता है। श्यामा द्वार में बैठ कर बीड़ी पीती है। सामने वाली सड़क की बाँयी ओर से युवक सोमा को कन्धा दिये दाखिल होता है। पलोने से तर है। उसके एक हाथ में लोहा है। सोमा के सर से खून निकल रहा है।]

श्यामा (चौंक कर) हाय यह क्या हुआ, सोमा को

सोमा : कुछ नहीं।

युवक : दंगा हो गया है।

हीरालाल : (ऊपर से झाँक कर) मर न गयी तुम ? कहाँ गयी

रोहित को पानी से बचाते ह। शोर बढ़ रहा है। बत्तियाँ बन रही हैं।]

गोपी (हीरा से) देखा —मैंने जो कुछ कहा था वही हुआ (और दोनों ऊपर चले हैं।)

[श्यामा अपने घर में अम्मी की तरह लिए रोहित को लेकर जाती ह नीलिमा अन्दर जाती है]

हीरालाल : (सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते) जान पड़ता है रंग बदल गया।

गोपी तुम बिलकुल नहीं समझते, मुझे सब पता है। तीस बरस यों ही नहीं दलाली में बिताये, कहाँ क्या होने वाला है कौन अफसर कौन नेता किस ढंग का है। किसको कैसा चलती है। यह सब बड़े आदमियों की सोहबत से मिलता है।

हीरालाल (बैठते हुए) इससे कौन इन्कार करता है। बड़े बड़े लोगों से रसूख है। आप न होते तो यह सब कैसे मिलता।

गोपी : (अपना बड़प्पन बघारते हुए) भाई यह तो पहले ही से तय था और जो तय था वही हुआ। आज कल की राजनीति कुछ ऐसी ही है। इसे हर आदमी नहीं समझ सकता।

[श्यामा अपने घर का किवाड़ बन्द करती है और तार पर कपड़े सूखने डालती है।]

हीरालाल तो यह कैसे हुआ।

गोपी (धीरे से) यह बात फैलनी न चाहिए। दो बड़ी पार्टियों में झगड़ा हो गया।

हीरालाल : किस बात पर।

गोपी : दोनों पार्टियों के लोग हरसू की सभी लाश पर अपना-अपना दावा करने लगे थे और समझते थे कि शहर में इन्कलाब कर देंगे, मैंने कहा था न। जहाँ इन्कलाब होना है हो जायगा। क्यों मामला हो गया न, भाई बिल्ली-बन्दर वाला किस्सा तो जानते ही हो अंग्रेजों ने हमें सब सिखा दिया है। सारा शहर तमाशाई था। पुलिस अधिकारी मारे-मारे फिरते थे।

श्यामा : (बाहर निकल कर पीछे से) तो हरसू को जिसने मारा है उसका क्या होगा।

गोपी : (ओरकर) उसे किसी ने नहीं मारा। बुखार था, पथराव करने के लिए गया, पैर फिसला मुँह के बल गिरा—हार्टफेल हो गया।

हीरालाल : मगर अखबार में तो

गोपी : अखबार तो लिखते ही रहते हैं। अभी तुम जाकर सो जाओ—मैं भी चला।

[गोपी उठ कर चलता है। श्यामा द्वार में खड़ी खड़ी सोचती है। सामने वाली सड़क की बाँयी ओर से सुन्दर सोमा को कन्धा दिये दाखिल होता है। पसीने से तर है। उसके एक हाथ में लोटा है। सोमा के सर से खून निकल रहा है।]

श्यामा : (चौंक कर) हाय यह क्या हुआ, सोमा को

सोमा : कुछ नहीं।

सुन्दर : सदमा हो गया है।

हीरालाल : (अन्दर से झाँक कर) मर न गयी तुम ? कहाँ गयी

की लुमाओं के साथ, हो गया इन्कलाब !

मुकुन्द : (कोने पर बढ़ते हुए) पत्थर लगा है।

कमला : (झांक कर देख, लौटते हुए) बड़ा अच्छा हुआ—

[शोभा मुकुन्द का सहारा छोड़ लड़खड़ाती हुई अन्दर जाती है। हीरालाल घूर कर देखता रहता है। मुकुन्द अपने सर पर हाथ रख बताता है कि ...]

मुकुन्द : यहाँ लगा है, हम डाक्टर को बुलाने जाते हैं।

हीरालाल : मर जाने दे। कोई जरूरत नहीं डाक्टर-वाक्टर की।

गोपी : (लौटते हुए) देखो तुम्हें इस समय जोश में आने की जरूरत नहीं है। पहले शोभा का जोश ठन्डा हो जाने दो, तब अपना जोश दिखलाना। पहले उसकी मरहम-पट्टी का इन्तजाम करो। अभी उसे कुछ न कहो—मैं चलता हूँ। कल आकर उससे बात करूँगा।

[गोपी गली से निकल जाता है, हीरालाल अन्दर से द्वार बन्द कर लेता है। नीलिमा दीवार के सहारे बैठी प्रभात की राह देख रही है। रोहित नानी के साथ सो गया है। श्यामा बार-बार गली में झुक देखने जाती है।]

श्यामा : अभी नहीं आया, (नीलिमा से) रोहित के बाबू आये या नहीं।

[प्रभात—कुछ सोचता हुआ मन के साथ सर ऊँचा किये सामने की गली से आता है।]

प्रभात (नीलिमा को देखकर) अरे तुम अभी तक

(दोनों अन्दर चलते हैं—श्यामा दौड़ी आती है)

श्यामा : बाबू हमारा चन्दू कहाँ है।

प्रभात : (मुड़ते हुए) श्यामा—चन्दू गिरफ्तार कर लिया गया है।

श्यामा (छाती पीटते हुए) हाय राम अब मैं क्या करूँगी। (रो पड़ती है)

प्रभात यह कोई अकेला नहीं है—पचास आदमी हैं। (अन्दर मुड़ कर रोहित को नीलिमा को दे देता है) कूटनीति इसे कहते हैं।

श्यामा बाबू उसे जल्द छुड़वा दो—हाय मैं क्या करूँ। कहा था कि न जा, न माना।

(आँसू पोंछती है)

प्रभात : सब जल्द छूट जायेंगे, दो-चार दिन की बात है परेशान न हो—दो पार्टियों में झगड़ा करवा कर आग के व्यापारी अपने खूनी पंख फैला रहे हैं—लेकिन यह सब कितने दिन चलेगा।

श्यामा मैं कुछ नहीं जानती बाबू जी! चुप को राखनी रही। ज्यादा सीढ़ी न चढ़े—मुझे क्या—जो आग खायेगा अंगारे उगलेगा।

(श्यामा हाथ झटकती अपने घर जाती है—नीलिमा हार दब लेती है। श्यामा—अपना दिया बुझाती है। हाथ मुँह धोती है। थाली में खाना परोस कर रखती है। कौर तोड़ कर मुँह के पास तक ले जाती है कि फिर थाली में रख कर सोचने लगती है और खाना उठा कर ताक पर रख देती है।)

गली से तीन आदमी बाबो के निवास में प्रवेश करते हैं। एक के हाथ में टार्च है।]

सरस्वती कुमार (सुदामा से) कौन सा घर है।

(चारों ओर टार्च की रोशनी डालकर देखता है।)

सुदामा (टार्च वाला हाथ पकड़ कर) ये है। घर यहाँ कोई पड़ा भी तो है।

सन्त्री (अपनी लाठी पकड़ते हुए) कौन है।

सरस्वती कुमार : मैं हूँ सरस्वती कुमार।

(सुदामा प्रभात को आवाज़ देता है)

सुदामा : (ज़ोर से) प्रभात जी!

[प्रभात तहमत बाँधे, बनियाइन पहिने, छोटी तौलिया से मुँह पोंछता द्वार खोलकर]

प्रभात अरे आप इस समय—

सरस्वती कुमार : यानी आपने यह क्या किया?

प्रभात : आइये बैठिये तो।

सरस्वती कुमार बैठूँ क्या यह तो बताइये कि आपने यह क्या किया।

प्रभात क्या किया है मैंने—

सरस्वती कुमार यानी-यानी आप नहीं जानते कि आपने क्या किया है। यानी किसने कहा था कि आप गलत खबरें छापें।

प्रभात इसमें किसी से पूछने की जरूरत थी। (जरा तन होकर) मेरी ड्यूटी थी।

सरस्वती कुमार : यानी-यानी आप नौकर हैं।

आपने अखबार की पालसी से काम नहीं लिया।

प्रभात यही कि सत्य का झूठ क्यों नहीं बना दिया।

सरस्वती कुमार : झूठ—बिलकुल झूठ—।

प्रभात सत्य और झूठ की पहिचान आपके पास नहीं है।

सरस्वती कुमार : चुप रहिये।

प्रभात : आपकी आँखों में स्वार्थ का चश्मा लगा हुआ है। मुझे मालूम है कि सात दिन पहिले चेम्बर के एक कोने में एक साजिश तैयार की गयी थी। यों दो नहीं आदमी का खून किया गया।

सरस्वती कुमार आप धोखे में हैं।

प्रभात : मैं नहीं सरस्वती कुमार जी आप धोखे में हैं। आ रात्री, ब्याह शादी, पत्नी की खबरें छाप कर रुपया कमाते हैं, जिन्दगी के दुश्मनों की दलाली करते नहीं थकते।

सरस्वती कुमार : आप गैरजिम्मेदारी की बातें करते हैं। (अपने आप से) चलो जी हमें ऐसे आदमी की जरूरत नहीं।

प्रभात : (आवेश में द्वार बन्द करते हुए) जाइये मुझे भी ईमान बेचने की जरूरत नहीं।

(द्वार बन्द होने के साथ पर्दा गिरता है।)

पाँचू : (घबराकर) क्या है मुकुन्द बाबू ।

मुकुन्द : भट्टा तुम पड़े रहो हम सुने लेटे हैं।
(रिसीवर कान में लगाकर) हिल्लो ? हिल्लो ?
(रुककर) टोई नहीं बोलटा !

[रिसीवर रख कर मच्छर का द्वार बन्द कर लेता है। सामने की गली से हार्न की आवाज आती है। हीरालाल कमीज-पतलून पहिने बर्रों का बण्डल लिए शराब की मस्ती में लड़खड़ाता हुआ प्रवेश करता है।]

हीरालाल : (पीछे मुड़कर) जाओ, ड्राईवर जाओ ! (नशे की झोंक में) पर्दे हम लिये हैं। आका कहना, मैं मंजिले मकसूद पर पहुँच गया। (सीने पर चढ़ते हुए) अब पाँचू के बच्चे ! भैंसे की तरह पड़ा सो रहा है। जैसे सोने के लिए नौकर रक्खा है।

[हीरालाल पाँचू को पकड़ कर हिलाता है। पाँचू हड़बड़ा कर पड़े रिसीवर उठा कर कान में लगाता है।]

पाँचू : हल्लो ? ये (मुँह बनाकर) फ़ोन सा शराब है बाबू जी (रिसीवर रख कर मेज़ से उतरता है।)

हीरालाल : शामा ! (पाँचू से) मुकुन्द को आवाज़ दे' उन्हें यह पर्दे पसन्द हैं कि नहीं ?

पाँचू : आवाज़ दूँ या बुला लाऊँ ?

हीरालाल : सुना नहीं क्या कहा है ?

पाँचू : बाबू जी मुहल्ले वाले आ रहे हैं।

हीरालाल : (डपट कर) बाबू जी के बच्चे ! तू नौकर है या मुहल्ले वालों का ?

ऐश्वर्य ऐसे ही नहीं मिल गया है। बुराइयों का बोझ उठाना पड़ा है।

(लड़खड़ाता अन्दर चला जाता है)

मुकुन्द : कुछ देखी-सुनगे हो ठोमा ?

ठोमा : भइया—दिनों-दिन पतन की ओर जा रहे हैं। रात-रात भर गायब रहते हैं।

[ठोमा और मुकुन्द द्वार तक चल कर अन्दर जाते हैं। पाँचू मेज पर लेट जाता है। पीछे गली से, बैलगाड़ी के पहियों की आवाज आती है। मन्दिर के घण्टे बजते हैं। प्रभात लालटेन लिये आकर कुर्सी में बैठता है। उतरी उमर का गंगाभक्त अपनी बस्ती को जाता है।]

गंगाभक्त : गोविन्द माधो हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।

(पाँचू अपनी कुर्सी से उठता है)

प्रभात : क्या काम से आ रहे हो ?

पाँचू : हाँ आज ओझी अदलेगी। अभी फिर भाग के आना है।

[अन्दर जाता है। टेलीफोन की घण्टी बजती है। पाँचू नाराज होकर रिसीवर उठाता है।]

पाँचू : दिन माँ काम के मारे साँस नहीं लागति रात माँ तर मारे ओस नहीं लागति (रिसीवर उठाकर प्रभात को अपनी ओर देखता समझ कर दोनों हाथों से फोन बन्द कर लेता है।) तुम्हीं बताओ बाबू जी यही कोना जिन्दगी है।

प्रभात : पाँचू सारी जिन्दगी तो कुछ इसी तरह जाती

तिरछी चलती है । किसका फोन है ?

(फिर लिखने लगता है)

पाँचू : (सर हिला कर) हला-हला, बन्द कर दिया जाओ ।

[रिसीवर रख कर कमरे के दूसरे किनारे पर टँगे अपने कोट को पहनता है । फिर घन्टी बजती है । कमरे से हीरालाल स्लीपिंग-सूट में नशे के खुमार में प्रवेश करता है ।)

हीरालाल : सर के पास घन्टी बज रही है । अब कुम्भ करण की नींद सो रहा है । (पाँचू को देखकर) हराम जाद तुमसे कितनी बार कहा कि कान में टेली-फोन लगा कर सोया कर । (रिसीवर उठा कर) रोगी लगी है, जानता नहीं कि आदमी मारे-मारे फिरते हैं । हाँ हाँ पाँचू है । गधा कहीं का नहीं, नहीं तुमको नहीं, हाँ, हाँ अभी गाड़ी दर पहिले आया हूँ । उसने आने ही नहीं दिया । अच्छा, हाँ मुझे यहीं से ले लेना ।

[रिसीवर रख कर लड़खड़ाता हुआ अन्दर चला जाता है । श्यामा द्वार खोलती है । पाँचू फिर लेट जाता है ।]

श्यामा : (बच्चू को हिलाते हुए) अरे सवेरा हो गया, उठ रे, जाना नहीं है क्या ? दर हो गयी ।

बच्चू (कुनमुनाता है) हं, हं हं, रहने भी द ।

श्यामा दर हो गयी है रे ।

बच्चू हो जाने दे, तू तो सोती रही है । तनिक मुझे भी सो लेने द ।

श्यामा (चन्दू का मुँह बन्द करती हुई) श, श, श, प्रभात जी बैठे हैं। (धीरे से) सो,ना! मुझ पर इल्ज़ाम क्यों लगाता है।

चन्दू अच्छा चल! देख मोपू बजे तो उठा लेना।

[श्यामा कमरे लेकर पीछे गली की निकल जाती है। प्रभात कविता लिख जाने की खुशी में उठकर नीलिमा को आवाज़ देता है।]

प्रभात नीलिमा, नीलिमा (कपड़ों खटखटाते हुए) अरे क्या सोती ही रहोगी। नीलिमा आ नीलिमा।

[वापस आकर कविता देखता है। गुनगुनाता है। नीलिमा का प्रवेश]

नीलिमा : क्या मुझे बुला रहे थे।

प्रभात (पुर्जा खोलते हुए) आओ देखो कितनी अच्छी कविता लिखी है।

नीलिमा : (अंगड़ाई लेते हुए) अच्छा, तो कविता सुनने के लिए बुलाया है? मगर सुनने का किराया लूँगी।

प्रभात। मुझे ख़रीद कर कविता सुनने का मूल्य चाहती हो।

नीलिमा : (मुस्करा कर) अच्छा यह सब जाने दो। क्या वह गीत लिख गया जो बहुत दिनों से लिखने को थे?

प्रभात : नहीं, वह गीत तो अभी नहीं लिखा, पर लगता है उसकी भूमिका लिख गयी है (पर्दे में बीड़ी डालते हुए) नीलिमा मैं चाहता हूँ वह गीत ऐसा

बने जिसे दुनियाँ का हर आदमी गाये।

नीलिमा : तब तो बड़ा अच्छा गीत होगा। लेकिन तुम तो लिखने के पहले ही उसका आनन्द उठा लेना चाहते हो।

प्रभात : पैदा होने से पहले प्रसव-पीड़ा का जो एक माँ आनन्द उठाती है वही

नीलिमा : तो आप भी प्रसव-पीड़ा का आनन्द उठा रहे हैं। (हँसते हुए) अच्छा देखूँ किसका जनम हुआ है।

प्रभात : पहिले सुनो!

[चेयर में घूमकर बैठ जाता है। गुनगुनाता है। गाता है। श्यामा, सोमा, पुरुष आदि जरा भर में ही निकलकर सुनने लगते हैं। पांचू उठ बैठा है।]

गीत

देश हमारा धरती अपनी
हम धरती के लाल!
नया संसार बसायेंगे,
नया इन्सान बनायेंगे।

सौ-सौ स्वर्ग उतर आयेंगे,
सूरज सोना बरसायेंगे,
दूध पूत के लिए—
पहिनकर जीवन की जयमाल!
रोज त्योहार मनायेंगे। देश हमारा०

हीरालाल : मुझे कुछ होता आ रहा है ?

प्रभात : हाँ ऐसा ही दीखता है।

हीरालाल : तो आँखों की दवा कीजिये।

प्रभात : पड़ोसी के नाते कहता हूँ नहीं तो कहने की क्या ज़रूरत थी।

हीरालाल *मुझे आपके ज्ञान की ज़रूरत नहीं! अपना ज्ञान अपने पास रखिये।*

प्रभात : मुझे क्या करना है, आप जानें और आपका काम। मुझे तो आपकी बुद्धि पर तरस आता है।

हीरालाल *याद रखिये कि मैं सरस्वती कुमार नहीं हूँ जो सड़ी रस्सी को साँप समझ बैठे।*

प्रभात : ह ह ह तो सरस्वती कुमार सड़ी रस्सी को साँप समझ बैठे हैं।

हीरालाल साँप न समझ बैठे होते तो इतने बड़े प्रेस के मालिक होकर डेढ़ सौ रुपल्ली के नौकर से समझौता करने के लिए न दौड़े फिरते।

[हीरालाल घण्टी बजाता अन्दर जाता है। नीलिमा चाय लाती है।]

प्रभात : बड़ी अच्छी हो। इस समय चाय की बड़ी ज़रूरत थी। हाँ देखना किताबों में कहीं लिफाफा होगा।

नीलिमा किस पत्रिका में भजोगे।

प्रभात : भेज देंगे किसी में।

नीलिमा जो रुपया दे उसके यहाँ भेजो। मकान का किराया बढ़ गया है।

प्रमात तुम समझती हो, इस कविता से मकान का किराया अदा हो जायगा।

नीलिमा दस-बीस तो मिल ही जायेंगे। इतनी अच्छी कविता है।

प्रमात : (हँसते हुए) पाँच भी मिल जाँय तो बड़ी बात हो। बहुत कम पत्रिकायें हैं जो कविता के लिए कुछ देती हैं। और जो देती हैं वे अपने गुट बनाये हैं।

नीलिमा : लेख और कहानी के पैसे भी नहीं आये। दो-तीन दिन का राशन है, तुम कह रहे थे इस हफ्ते में आ जायेंगे। हफ्ता भी निकल गया।

प्रमात : (चाहे हो पैर बचेले हुए) आज-कल में आ जायेगा।

नीलिमा आज-कल देखते-देखते महीनों गुजर जाते हैं। (रुक कर) श्यामा कह रही थी

प्रमात : क्या कह रही थी।

(चप्पू पैर से द्वार खोलता है कट बैठता है।)

नीलिमा : कह रही थी कि हीरालाल तुम्हारे मकान में एजेन्सी का दफ्तर खोलने वाले हैं।

प्रमात : (उद्विग्न होकर) हमारे मकान में एजेन्सी का दफ्तर। हुँ जैसे लड़कियों का खेल है।

(अन्दर जाते हुए) लालटेन लेती आना।

[दोनों अन्दर जाते हैं। चन्दू बाहर औकरकर अन्दर जाता है। शोभा अन्दर से पुस्तकें लिये कालेज जाने के लिए आती है।]

मुकुन्द : (हवा में आकर) शोभा, शोभा आज फिर मामी दा पर डरड टर रहा है।

शोभा : (धीमे से मतलबे हुए) फिर कुछ होने वाला होगा। मुझे डर हा रही है।

[सामने की गली से जाती है। मुकुन्द अन्दर जाता है। पिछली गली से श्यामा किसी से कहती आती है। चन्दू ताश में कुछ खोज रहा है।]

श्यामा : (प्रवेश के पहिले) मेरे कलश टले रहना। मैं चन्दू से कह के अभी आती हूँ। कहीं सोता रहा, पगार लेने न गया तो दीवाली का सारा मजा किरकिरा हो जायगा (चन्दू को ताश पर कुछ खोजते देखकर) यह पचसी न ले! दूसरे की है।

(झपट कर अन्दर जाती है।)

चन्दू : (बाहर आकर) बीड़ी लेनी है।

श्यामा : आज पगार ला आयेगा।

चन्दू : अभी पगार का काई भरोसा नहीं। लेबर कमिश्नर का फैसला आसमान से गिरा और खजूर पर लटक गया। मिल-मालिक ताला-बन्दी कर रहा है।

श्यामा : ताला-बन्दी हो रही है तो पगार देने में उनकी छाती क्यों फटती है।

चन्दू : इसीलिए ताला-बन्दी हो रही है कि उन्हें पगार न देनी पड़े।

श्यामा : (गुस्सा कर) अब तेरा मैं कह रही थी न, कि तेरी तनखा का कोई भरोसा नहीं, मेरी तनखा तो बची रहती। पर मुझे तो साथियों की भूख हड़ताल किये थी। तेरी ऐसी नेतागीरी मुझे न चाहिये। तू ही बड़ा दिवाली सर पर है।

चन्दू : (मुँह पोंछते हुए) मजदूर की दीवाली तो उस दिन होती है जिस दिन उसे पगार मिलती है। जिस दिन पगार मिलेगी मना लेंगे दीवाली। (रुक कर) मैंने तुमसे तनखा देने का कब कहा था? तुमसे ही न रहा गया।

[मुन्ना श्यामा और चन्दू की बातों का मजा लेता पीछे की तरफ को जाता है।]

श्यामा : (मुँह बनाकर) मगर जब तू आकर नेता की तरह बात करता है, देख, मैं आज पुलिस कमिश्नर के यहाँ डेपुटेशन में गया था। आज दस हजार की मीटिंग में बोला, आज चार साथियों ने खाना नहीं खाया। तू ही बता, क्या मैं पत्थर हूँ। ऐसी हालत में क्या मैं छिपा के रख सकती हूँ। चन्दू तेरी श्यामा आदमी बन गयी है।

चन्दू : देख, मैं तुमसे कई बार कह चुका कि आदमी

न मन, नहीं तो मुझे और तुझे दोनों को तकलीफ होगी ।

श्यामा : मुझे तो हर वक्त मज़ाक सूझती है । कोशिश कर शायद पगार मिल जाय मैं चलती हूँ । आज बहुत पानी भरना है । कलश तकवा के आयी हूँ । चाभी रोहित की अम्मा को दे देना ।

(श्यामा जाना चाहती है ।)

चन्दू : अब आ गयी है तो ताला बन्द कर चाभी-आभी देख अपनी ।

(नंगे बदन पिछली गली की सरपट भागता है ।)

श्यामा : अरे रुक रुक, नंगा ही चला जायेगा कमीज़ तो लेता जा ।

[कमीज़ ले, द्वार तक, पीछे की गली को भागती है । चन्दू को लाने चलके रोहित का प्रवेश]

रोहित : (खाली खाट के पाये में अटक कर) लो यह चारपाई है ।

(मुड़के से पीछे की गली को खिसक जाता है ।)

अन्नो : जरा देख यह क्या रक्खा है । रोहित ओ बेटा रोहित, अन्दर गये क्या । नीलिमा देख रोहित अन्दर आया है क्या ?

नीलिमा : (द्वार से झांक कर) नहीं माँ यहाँ तो नहीं आया ।

अन्नो : मुझे छोड़ कर न जाने कहाँ खिसक गया ।

नीलिमा : पढ़ने जाना है, काजल के डर से भाग गया है ।

कहा था कि अपने हाथ से लगा लो, नहीं तो
मैं जबरदस्ती लगाऊँगी ।

[प्रभात अन्दर से लिफाफे में पेपर भरता आता है । मेज पर बैठ पेपर निकाल कर पढ़ता है और फिर बन्द कर एड्रेस लिखता है ।]

अम्मी : देख नीलिमा, मेरी चारपाई पर क्या रक्खा है,
जो गड़ रहा है ।

[नीलिमा उसकी चारपाई का बिस्तर उलट कर देखती है । पीछे की गली से हाँफती हुई श्यामा घर और बगल में मढ़े लिये आती है ।]

नीलिमा : कुछ तो नहीं है ।

श्यामा : (हाँफते हुए) रोहित की अम्मा मढ़े उतरवा ला ।
(नीलिमा मढ़े उतरवाती है ।) आग लगे ऐसी
नौकरी में ।

प्रभात : क्या हुआ श्यामा ?

श्यामा : बाबू जी दम्मा नहीं, मुँह तक नहीं धोया मैंने
कहन लागा, दौड़ते-दौड़ते मैं बेदम हो गयी ।
बाबू जी मैं चिल्लाती आती थी, अरे कमीज
तो पहिन ले, मगर वह सुनता ही न था । मैर
हुई जो गाड़ी आ रही थी । फाटक बन्द था,
मिल गया ।

(नीलिमा मढ़े लगर अन्दर चली जाती है ।)

प्रभात : तो दे आयी कमीज ।

श्यामा : (चोटी निकाल कर) हाँ । बाबू जी कहने लगा
यहाँ कोई कमीज नहीं देखना, साला जाकर

मुझसे चिढ़ गया है। क्षण भर की देर में सारा दिन नागा कर देता है।

(बत खींच कर सुआ पोरती है।)

प्रभात : मिलों में तो रात-दिन यही हुआ करता है।

श्यामा बाबू जी, आदमी आदमी है कोई जानवर नहीं।

प्रभात : हुँह जानवर? इस पैसे की गुलाम दुनियाँ में आदमी जानवर से बदतर है।

श्यामा ऐसी दुनियाँ तो बाबू हमें न चाहिये।

(दूसरा घड़ा उठाकर अपने घर जाती है।)

प्रभात तुम्हें न चाहिये, हमें न चाहिये। हमारी-तुम्हारी तरह और भी कुछ लोग हैं जो इस पैसे की गुलाम दुनियाँ से ऊब चुके हैं। कोई नहीं चाहता कि यह दुनियाँ रहे। फिर भी यह दुनियाँ है।

(पैसा लिये अन्दर जाता है)

श्यामा (अन्दर से अंजन लगाते हुए आती है) बाबू जी तुम तो सब समझते हो। इस दुनियाँ का कोई इलाज नहीं कर सकते?

भीखिमा (खाली घड़ा लिये श्यामा के घर आती हुई) पहिले अपना इलाज करलें फिर दुनियाँ का करें। (रुककर) श्यामा ललाइन के यहाँ नहीं गयी थी।

श्यामा : अभी ले आऊँगी, बहू से बात हो गयी है।

(अन्दर से ललता श्यामा को आवाज देती है।)

कमला : (तीखे स्वर में) श्यामा पानी कब तक आयेगा ?

श्यामा दिन भर पानी ही तो भरना है, हाथ-मुँह तो धो लूँ। तुम्हें क्या ? यहाँ तो धम-पुलिस में भी लाइन से खड़ा होना पड़ता है।

कमला (मुँह बना कर) आज-कल तेरा दिमाग चढ़ गया है।

(नीलिमा बाहर जाती है।)

श्यामा : दिमाग तो उनके चढ़ते हैं बहू जी जिनके पास धन-दौलत होती है। हम गरीबों के क्या दिमाग चढ़ेंगे।

कमला : (ऐंठ कर) जान पड़ता है कि पानी के लिए दूसरा कोई लगाना पड़ेगा।

श्यामा (जमीन पर थूक कर) लगा न लो ! कोई रोक है ? मैं कोई भीख के मारे तो नहीं हो जाऊँगा।

[हार मान कर गली से जाती है। कमला उसे घूरती हुई अन्दर जाती है। हीरालाल के कमरे पर टेलीफोन की घन्टी बज रही है। पाँचू बाहर से दौड़कर आता है। रिसीवर उठाकर सुनता है।]

पाँचू ना कट गया।

[रिसीवर रख देता है। घन्टी बजती है। पाँचू रिसीवर उठाता है। हीरालाल बाहर के लिए तैयार होकर आता है।]

हीरालाल : किसका फ़ोन है। (पाँचू के हाथ से रिसीवर लेकर सुनता है।) हलो, मैं हीरालाल बोल रहा हूँ। हूँ अच्छा अच्छा नमस्ते ! नमस्ते ! आप कब आये ? हाँ हाँ गाड़ी में बात कर ली। हाँ मैंने

उनसे कह दिया है। हाँ भाव, आज यह है कल ड्योढ़ा हो जायगा। हाँ हाँ अरे नहीं साहब। समझौता होने में कम एक सप्ताह लग जायगा। अच्छा अच्छा देखा चौबीस घन्टे में इन मिलों का माल साफ हो जायगा। खुले बाज़ार में कहीं एक चिट भी न ढूंढ़े मिलेगी। हाँ हाँ कतई ले लीजिये। डर न करिये मैं गांधी बाबू से कह चुका हूँ। हाँ जी-नमस्ते। (रिसीवर रख देता है। उठ कर खड़ा होता है। कुछ सोचकर टेलीफ़ोन का डायल घुमाता है। रिसीवर कान में लगाकर) हलो, हलो चन्द्रमा, गांधी बाबू का फोन दो। नहीं है। अच्छा देखो पटना के व्यापारी ने अभी फ़ोन किया था। अभी आयेगा। क्या बात हो चुकी है? (रुक कर सुनता है।) क्या बाज़ार में सनसनी है? सरकार खुद चक्कर में है? वह क्या कर सकती। हाँ हाँ अच्छा अच्छा, हाँ, उन्हें फोन दो। गांधी? हाँ, मैं हीरालाल बोल रहा हूँ। हाँ हाँ बम्बे और कलकत्ता का माल रोक लो। सारा माल यहाँ अच्छे दामों में चला जायगा। (रुक कर सिर हिलाता है) क्या पन्द्रह हजार मज़दूरों का जुलूस? हुं निकल भी सकता। और निकला भी तो दिवाली में उनकी कौन सुनता है। हाँ, हाँ गाड़ी भेजो मैं

अभी आता हूँ। और सुनो उसका फोन आया था। देखो मुकुन्द को पता न चले। (श्यामा साड़ियाँ लिये आती है। प्रभात के कर में देकर चली को जाती।) हाँ अभी तक तो नहीं आयी। क्या भेज दो है। (पाँडू से) देख बाहर गाड़ी तो नहीं खड़ी है। (हान की आवाज सुनकर) अरे आ गयी है। (रिसीवर रख) चल मेरे साथ।

पाँडू (लौटकर) कहाँ चलेका है, बाबू जी!

हीरालाल : (जीने से उतरते हुए) बेवकूफ गधे तुम से कितनी बार कहा कि चलते वक्त नहीं पूछा जाता। आ जल्द।

[पाँडू हीरालाल के पीछे सामने की गली से जाता है। प्रभात के पीछे नीलिमा का प्रवेश]

नीलिमा कमला श्यामा से कह रही थी कि उन्होंने यह मकान खरीद लिया है।

प्रभात : खरीद नहीं लिया हीरालाल ने मेरे एक सम्बन्धी और मुनीम को मिला कर अधिकारियों को साथ लिया है।

नीलिमा हमारे पास तो इतना पैसा भी नहीं कि हम लोगों को ~ सकें।

प्रभात : पैसा हो भी तो हम घूस देंगे, या तुमने कैसे सोच लिया। क्या इसीलिए सत्य का गला घोटने वाले सरकारी मुझसे की नौकरी छोड़ी थी।

नीलिमा : यह मैं नहीं कहती, पर अब क्या होगा। (रुक कर पेपर में लिपटी वस्तु देते हुए) लो इसे बेचकर किराया चुका दो।

प्रभात : (हैरत के साथ) इस बेच कर क्या हो गया है नीलिमा तुम्हें? लो इसे वापस रख दो।

[नीलिमा के हाथ में दे देता है। लाठी टेकती हुई अम्मी का प्रवेश।]

नीलिमा फिर यह किस दिन काम आयेगा। जब मकान का सामान निकाल कर बाहर फेंक दिया जायगा तब?

प्रभात इतना सरल नहीं है।

अम्मी क्या द रही है बेचने को।

प्रभात चढ़ाये का टीका! नीलिमा यह हमारे-तुम्हारे जीवन की मधुर याद है! जाओ इसे जहाँ से लायी हो चुपचाप उसी जगह रख दो। मैं जाता हूँ। बच्चों की कहानियाँ एक प्रकाशक को दी हैं। अगर उसने ले लिया तो रुपया मिल जायेगा। वापस आये तो कुछ देना मैं उनके घर जाऊँगा।

[कुछ पेपर आदि उठाकर सामने की गली से जाता है। पीछे रोहित आकर नीलिमा से आँख चुराता भागकर चला जाता है।]

नीलिमा (देख लेती है) कहाँ निकल जा रहे हो? चलो पहिले काजल लगवाओ।

[रोहित के पीछे अम्मा जाती हैं। रोहित भाग कर पीछे की गली को जाता है। नीलिमा उँगलियों में काजल लगाये रोहित को खोजती है।]

नीलिमा   रोहित रोहित।

चाची   फिर भाग गया?

नीलिमा   इसे काजल नहीं लगवाता, परेशान कर रहा है।

(चाची को जाती है। कमरे से शोभा बाहर आती है।)

चाची   सब बच्चे ऐसा ही करते हैं। तू तो मुझे हैरान कर देती थी। कभी बच्चों के झाड़ में कभी खाट के नीचे कभी किवाड़ों की आड़ में छिपती थी। और कुछ पदार्थों के लालच में काजल लगवाती थी।

शोभा   (मुस्करा कर) कौन चाची?

(चाची को पकड़ कर खड़ी हो जाती है।)

चाची   यही नीलिमा।

शोभा   अच्छा भाभी के लिए कह रही हो। यहाँ तो नहीं है।

चाची   कहाँ गयी? मैं तो उसी को कह रही थी। क्या करूँ भगवान ने आँखें ले लीं। कोई गम पाप भी नहीं किए। उनकी मरजी।

[पीछे को भागते रोहित के पीछे नीलिमा आती है। रोहित दौड़कर पीने पर चढ़ जाता है]

नीलिमा   पकड़ना इसे।

[शोभा राह रोक लेती है। नीलिमा रोहित को पकड़ लेती है। वह हाथ-पैर पटकता है। नीलिमा उसे खींचकर मेज के पास ले आती है। काजल लगाती है। उसके आँखों में उँगली घोंपती है। शोभा बाहर जाती है।]

रोहित — अब पैसा दो!

नीलिमा — पैसा, हाँ पिताजी पैसा लेने गये हैं। आ जायें पटाखा मँगवा दूँगी।

रोहित — खूब सारे मँगवा देना।

नीलिमा — (अन्दर जाते हुए) हाँ खूब मँगवा दूँगी।

रोहित — (माँ को दोनों उनके पीछे भाग जाते) हम चर्खी फुलझड़ी सब लेंगे।

[बच्चे दोनों अन्दर जाते हैं। नीलिमा घर देख लेती है। सामने की गली से पाँचू डलिया में दूध लिये आता है। दोनों पुस्तकें लिये सामने की गली को जाती है।]

अम्मी — (स्वगत) हमारे बचपन में रुपया सेर घी और रुपये के सत्रह सेर गेहूँ मिलते थे। हाय वह दिन कितने अच्छे थे!

[पिछली गली से श्यामा पानी के घड़े लिये आती है। घड़े चबूतरे पर रख कर अम्मी की बातें सुनती है।]

श्यामा — किससे कह रही हो चाची।

अम्मी — अपने आपसे कह रही हूँ। और यह बातें किससे कहूँगी। अब तो बचपन जान ही नहीं पड़ता कहाँ से आया कहाँ चला गया। पैदा होते ही बीमारी-रोग सताने लगती है।

श्यामा — लोग कहा करते थे कि अंग्रेज़ चले जायेंगे तो देश में घी-दूध की नदियाँ बहेंगी।

अम्मी — (मुस्कराती हुई) घी-दूध की नदियाँ तो

हमारे बचपन में बहती थी, अब तो तबाही के दिन हैं।

श्यामा किसी को कल से खाने को रोटी नहीं मिलती।

अम्मो कल से रोटी कैसे मिले, आदमी-आदमी को खाये जा रहा है। सुन बेटा, ये (हाथ से हीरालाल के मकान की ओर इशारा करके) हमारा मकान, देख कोई है तो नहीं ?

श्यामा (अम्मो के मुँह के पास कान लगा कर) हाँ, (अम्मी चुपके-चुपके कुछ कहती है।) हाँ, हाँ, मैं राहिल की अम्मा को पहले ही बता चुकी हूँ। प्रभात जी कहाँ है।

अम्मी सेठ के घर गया है। (कुछ सोचते हुए स्वगत) नीलिमा सुहाग का टीका बन रही थी।

श्यामा चाची, गरीबी जो चाहे सो कराये; मैं समझती थी कि चन्दू का प्यार मिल जायगी। त्यौहार में किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़ेगा।

[टेलीफोन की घन्टी बजती है और बन्द हो जाती है। श्यामा की आवाज़ सुनकर नीलिमा आती है।]

नीलिमा (द्वार खोलते हुए) अरी श्यामा !

श्यामा पानी के लिए कह रही हो।

नीलिमा पानी के लिए नहीं श्यामा एक साड़ी कटी है आ देख ले यहाँ नाम लगेगा कि

[अम्मी साड़ी देखते अन्दर जाती है। पीछे श्यामा है। नीलिमा

हार रख लेती है। टेलीफोन की घंटी बजती है बाजार जाने के लिए तैयार होकर मुकुन्द प्रवेश करता है।]

मुकुन्द टामी नहीं है। टामी नहीं है। टेलीफ़ोन या रहा बज रही है। (रिसीवर उठाकर सुनता है।) हल्ला हल्ला ऐं—ऐं, हैं तुम यहाँ ठ बोल रहा हा। गिरधा गहटी हा। हम मुकुन्द बोल रहे हैं।

[श्यामा आई। जिसे सामने की गली को जाती है। भीतर से कमला कांपती हुई प्रवेश करती है।]

कमला किस से घुन-घुन कर बातें कर रहे हो ?

मुकुन्द टाया लड़की है।

कमला श्यामा का पूछ रही होगी ?

मुकुन्द : नहीं तुम्हारे पण्डित यानी महया ठ बातें करना चाहता है। हाँ, हाँ मेरी भाभी हैं।

कमला (बात कर) कौन है देखूँ ता (मुकुन्द के हाथ से रिसीवर छीन लेती है। मुकुन्द मुँह बनाता है। रिसीवर कान में लगा कर मुकुन्द से) क्या नाम है ?

मुकुन्द नाम ता नहीं पूछा।

कमला तुमसे नहीं मुकुन्द यह ता बोल रही है उससे पूछ रही हूँ। हाँ, हाँ तुम्हीं से पूछ रही हूँ। कौन हो तुम ? किस से मिलना है ? क्या करोगे उनसे मिल कर ? हाँ हाँ पहले अपना नाम तो बताओ (नौकरानी होकर) ऐं, अजना हल्लो ! हल्लो !

(पता-सा मारे लगता है। वह गिरने लगती है।)

मुकुन्द : (एक हाथ से भाभी को सँभालते हुए दूसरे हाथ से रिसीवर लेकर) ग्ल्लो, हिल्लो, ट्या टह हिया भाभी ठे (मुँह बनाकर) ट्या हुआ भाभी ?

[पीछे की पत्नी पर हीरालाल प्रकम्पित-सा तेजी में आता है। मुकुन्द को हल्लो-हल्लो सुनकर]

हीरालाल (सीढ़ियों पर चढ़ते हुए) किसका फोन है मुकुन्द ?

मुकुन्द बेठो बेठा, भाभी ट्या ट्या हो गया।

हीरालाल (रिसीवर छीनकर कान में लगाता है) क्या हो गया हल्ला-हल्ला कोई नहीं।

(रिसीवर रख देता है।)

मुकुन्द लाट्टी ने भाभी ठे टुट टट ग्या है।

हीरालाल कौन लड़की थी किसका पूछ रही थी ?

मुकुन्द टुमरा पूछ रही थी।

हीरालाल हमका पूछ रही था सा यह यहाँ क्या करन आयी थी। हमार यार कहा कि टेलीफोन तार लिए नहीं है। काल तुन भेजना से क्या कहा है। क्या करा है ? पाँचू, पाँचू ?

(आवाज देता, तेजी से अन्दर भटकता है।)

पाँचू (अन्दर से) आयेन बाबू जी।

हीरालाल हरामजादे, तुझे परद में बैठन के लिए नहीं टमीफोन पर बैठने के लिए नौकर रखा है।

[ममता सिटपिटाई-सी उठ कर अन्दर जाती है। टेलीफोन की घण्टी बजती है। मुकुन्द टेलीफोन का रिसीवर उठाने को हाथ बढ़ाता है।]

हीरालाल : (घूमकर) रहने दो हम आते हैं। तुम एजेन्सी के दफ्तर चलो। (मुकुन्द से रिसीवर लेकर) हलो! मैं हीरालाल बोल रहा हूँ। हाँ (मुकुन्द से) फिर चल दिये घर के अन्दर? हाँ, मुकुन्द है।

मुकुन्द : अच्छा तो ठीक हो गए हैं।

हीरालाल हाँ, हाँ, अच्छा, अच्छा तब तो फिर जरूर खतरा है। मैं अभी आया। पाँचू अन्दर ही घुसा रहेगा। (और मुकुन्द के पीछे चला जाता है। पोस्ट मैन बगीची वाले से प्रवेश कर प्रभात के चबूतरे पर अखबार फेंक आवाज देता है) पोस्ट मैन!

नीलिमा : (प्रवेश के साथ जोर से) मनीआर्डर तो नहीं है?

[पोस्टमैन हाथ हिला कर चला जाता है। रोहित ठुनकता आता है।]

रोहित हमें पैसा दो, हाँ, हाँ, हम फुलझड़ी लेंगे।

[माँ की धोती पकड़ कर खींचता है। धोती नीलिमा के सर के पास आ जाती है।]

नीलिमा (क्रोध में आकर रोहित के मुँह पर तड़ से मारती है।) बेवकूफ कहीं का। पैसा दो, पैसा दो, जैसे मैं कोई पैसे का पेड़ हूँ।

[नीलिमा फिर थप्पड़ मारना चाहती है कि प्रभात रोक लेता है। उसने रोहित को धोती खींचने देता है।]

प्रभात नीलिमा।

नीलिमा (रोहित का कन्धा झटक कर) बस यहाँ से (प्रभात से।) यह करतूत देखो अपने बेटे की।

प्रभात (रोहित को समेट कर) धोती क्यों फाड़ डाली (रोहित अपराधी की तरह बाप से लिपट जाता है) मनीआर्डर वाला आया था ?

नीलिमा मनीआर्डर हो तो आये, पोस्टमैन यह अखबार दे गया है। कल दिवाली है (रुक कर) बच्चों की कहानियों का क्या हुआ ?

प्रभात अभी कुछ नहीं हुआ।

नीलिमा आखिर पूछ रही हूँ तो

प्रभात क्या करोगी पूछ कर ! बताऊँ और तुम से बहस करूँ।

(रोहित को अलग कर देता है।)

नीलिमा जान लेने पर कम-से-कम मन को शान्ति तो मिल जायेगी।

प्रभात मनको शान्ति मिल जायेगी, पर, (रुक कर) जानती हो क्या कहा। कहा कि इन कहानियों में जो भावना भरी गयी है उससे बच्चों में मनायन और साहस जाग उठने का डर है। वह तो चाहते हैं कि चाहो, गधों की कहानियाँ लिखो और नयी हानदार पीढ़ियों की नस्ल खराब करो। नीलिमा ! पैसे फेंक कर, बालक का युग-भ्रम की शिक्षा दें और कहें कि बालू में

दूध के पेड़ उगाओ। यह मुझ से नहीं हो सकता।

[नीलिमा क्षण भर तो चुप्पी रहती है, किन्तु ज्यों ही उसे याद आता है कि उसे अपनी पड़ोसी के लड़के की छठी में जाना है, लेकिन पहिनने के लिए कोई साबुत धोती नहीं है, हताश होकर सांस लेती है। परिस्थिति को पति से छिपाना चाहती है, पर प्रभात की दृष्टि पत्नी की पैबन्द लगी फटी धोती पर पड़ती है। नीलिमा की आँखों से आँसू टपक पड़ते हैं।]

प्रभात : क्यों, क्या हुआ ?

नीलिमा (आँसू पोंछ कर) कुछ नहीं।

प्रभात नीलिमा बता दो। मुझे बहुत कुछ मिल चुका है। छिपाने से क्या ?

नीलिमा सुरेश के लड़के की छठी में जाना था।

प्रभात (अपने आप पर व्यंग) हुँह, और धोती के पैबन्द हँसी कर रहे हैं। (क्षण भर रुक कर) कोई दूसरी साड़ी नहीं है ?

नीलिमा है, सुहाग की। उसे भी रोज़-रोज़ पहनने लगूँगी तो वह भी कितने दिन चलेगी।

(पोटली मेज की दराजों में बन्द है।)

प्रभात : तो तुम चाहती हो कि वह अमर अमर बनी रहे।

नीलिमा अमर अमर तो यह काया भी नहीं है। वह तो कपड़ा है।

प्रभात तो फिर उस पर इतनी ममता क्यों ?

नीलिमा (शरमाते हुए) जैसे तुम नहीं जानते।
(सर झुका लेती है।)

प्रभात (रोहित से) देख बेटा देख तेरी माँ दुल्हन बनी आ रही है।

नीलिमा (सर उठाकर) बच्चे के सामने ऐसी बातें नहीं करते।

प्रभात (पुलकित होकर) उस दिन भी इसी तरह कमल खिला था। बिजली चमकी थी। दूधिया हँसी के फव्वारे, एक सुन्दर गीत बनकर चाँदनी में उतर आये थे।

नीलिमा लो तुम तो कविता करने लगे।

प्रभात तुम साक्षात प्रेरणा जो खड़ी हो। नीलिमा मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम्हारे स्वप्न अधूरे रह गये। इच्छायें हँसी में छिपी तड़पती रहीं। तुम्हें मेरे साथ अगर कोई चीज़ मिली तो केवल पीड़ा, वह भी पीने के लिए।

[कुर्सी पर बैठ जाता है। नीलिमा पर से ज़मीन की मिट्टी कुरेदती रहती है]

नीलिमा (मौन भंग करते हुए) चलो भोजन कर लो। ढाई-तीन बज रहे हैं। मुझे अभी जाना है। मैं चल कर परोसती हूँ। आओ जल्दी।

[नीलिमा अन्दर चली जाती है। प्रभात मेज़ पर कुहनी रख कोली में मुँह रख कर सोचने लगता है।]

प्रभात (रोहित को पेपर उलटते-पलटते देख कर) क्या कर रहे हो बेटा। टेबुल का सामान नहीं छूते।

रोहित हमें फुलझड़ी नहीं लाये।

प्रभात दिवाली तो कल है, आज क्या करोगे?

रोहित सब लड़के छुड़ाते हैं। हम भी छुड़ायेंगे, हम फुलझड़ी लायेंगे।

प्रभात अच्छा ला देंगे। चलो आमा रोटी लायें।

[दोनों बाहर जाते हैं। प्रभात द्वार बंद कर लेता है। पिछली गली से श्यामा बच्चे लिये आती है। द्वार खोलकर अँगीठी सुलगाती है। सामने की गली से थैलों में चन्दू आता है। श्यामा को अँगीठी जलाते देखकर]

चन्दू अभी तो अँगीठी नहीं जली। खाने को क्या मिलेगा।

श्यामा (अँगीठी छोड़ उठते हुए) अँगीठी जलने में कितनी देर लगती है। हवा में रख देती हूँ, अभी हो जायगी।

(अँगीठी लेकर बीच चबूतर पर रख देती है।)

श्यामा मैं समझती थी कि पराठ रक्खे हैं, खा गये होंगे।

चन्दू (चारपाई बाहर खींचकर) खा कैसे गया होता। मज़दूरों में फूट डालने वाले नेता, मालिकों से रुपया खाते हैं और मज़दूरों को धोखा देते हैं।

श्यामा सुना था, जुलूस निकलेगा। क्या हुआ?

चन्दू तीन मिलों में पगार मानी बँटी, बाकी में बँट गयी है। त्योहार के कारण मज़दूर अपने-अपने घर जाने की तैयारी में लगे हैं।

श्यामा साल भर का त्योहार है। जिन्हें पगार मिल गयी है, वह घर आयेंगे या जुलूस देखेंगे।

पन्नू यही तो वह नेता भी कहते हैं जो मालिकों से पैसा खाये बैठे हैं।

श्यामा (झुक कर) तो तू मुझे भी घूसखोर नेता समझता है।

पन्नू (हँस कर) अरे, तुझे कौन कहता है? मान न मान मैं तेरा मेहमान। बेकार नेता बनती है।

श्यामा मैं तो पसन की बात कह रही थी, सब मिलों में पगार न बटती तो कौन घर आने का नाम लेता?

पन्नू पूँजीपरस्त नेता यही तो चाहते हैं। नहीं त्योहार के मौके में ताला बन्दी करने की हिम्मत मालिकों में न थी।

(श्यामा अँगीठी उठा कर अन्दर रखती है।)

श्यामा ये मिल खुलेंगे या बन्द रहेंगे।

पन्नू यह ताला-बन्दी मिल बन्द करने के लिए नहीं, मुनाफ़ा कमाने के लिए की गयी है।

श्यामा ललाइन के घर में बात हो रही थी।

पन्नू क्या बात हो रही थी?

[श्यामा पराठा ख़त्म करके पन्नू को देती है। पन्नू खाता है।]

श्यामा पचास हज़ार का माल ख़रीदा है। एक लाख मुनाफ़े का तैयार है और दो ललाइन कह रही थी

कि इनके हीरालाल के पास तो मिल की एजन्सी है।

कमला (ऊपर से झांक कर) एजन्सी है तो लाखों कमा लेंगे, यही न ? अरे तुम्हारा पेट क्यों दर्द कर रहा है ? रुपया नहीं लगाया है।

श्यामा (बाहर निकल कर) आ हो । हम न जानती थी कि तुम बहू इस तरह कान लगाये खड़ी होगी। मैं तो आ सुन आयी थो कही बता रही थी।

कमला दूसरों की बढ़ती देख कर सबको बुरा लगता है।

श्यामा बहूजी, बेकार बातें न करो, मैं सब जानती हूँ। (पलट कर) चन्दू पराठा उतार ले, बल्ला आ रहा है।

(सामने की गली से तेजी में शेखर का प्रवेश)

शेखर चन्दू, जुलूस स्थगित नहीं किया जा सकता। त्योहार की आड़ लेने वाले नेता अपने आप बनकाब हो रहे हैं। मजदूर समझता है, आज तीन मिलों में ताला-बन्दी हुई है कल उनके मिलों का भी नम्बर आयगा। तुम अभी अपने सभी हाथों में पहुँचो। त्योहार के नाम पर मालिकों क दलाल मजदूरों में फूट पैदा कर रहे हैं।

चन्दू : मगर अब उन मजदूरों को रोक रखना बहुत मुश्किल है, जो अपने अपने बाल-बच्चों से मिलने की तैयारी कर चुके हैं।

श्यामा : (बाहर आकर) शेखर बाबू चन्दू सही कहता है। जिनको पगार मिल गयी है वह दाल, गल्ला, तेल, खिलौना, कपड़ा-लत्ता सब खरीद चुके होंगे।

शेखर : यह सब सही है, पर मजदूर अपने ऊपर हुए हमले को खूब समझता है। *श्यामा तुम चन्दू की हिम्मत* तोड़ती हो! उसे पस्त कर रही हो?

श्यामा (चिढ़ कर) क्या कहते हो शेखर बाबू, मैं चन्दू की हिम्मत तोड़ रही हूँ? चल रे चन्दू मैं भी तेरे साथ चलती हूँ। श्यामा न बुज़दिल है, न किसी को बुज़दिल बनाती है। चल चन्दू चल फाटक!

चन्दू चल बैठ, अभी तेरी ज़रूरत नहीं है। जब ज़रूरत होगी तब देखा जायेगा (कमीज़ पहनते हुए बाहर से) मैं जाता हूँ।

शेखर हाँ, तुम जाओ, मैं प्रभात जी से मिलके अभी आता हूँ। अगर वह मीटिंग में आने के लिए राजी हो गये तो साथ ले आऊँगा।

चन्दू श्यामा, प्रभात जी घर में हैं बुला दे।

[तेज़ी से पीछे की गली को जाता है। श्यामा झपट कर प्रभात के घर जाती है। कांग्रेसी टोपी ओढ़े हीरालाल का प्रवेश। अन्दर आकर हीरालाल टेलीफोन का डायल घुमाता है।]

हीरालाल हलो हलो (ज़ोर से) हलो बेबी बाबू? मैं हीरालाल, हाँ हाँ, क्या १४४ लग गयी है।

(रुक कर) नहीं भाई दिवाली और शान्ति-सम्मेलन, हलो-हलो, कौन हैं आप? बीच में कूद पड़ बन्द कर दीजिये, हलो-हलो।

[रिसीवर रख कर फिर डायल घुमाता है। श्यामा के साथ प्रभात का प्रवेश।]

प्रभात — कहिये शेखर जी कैसे कष्ट किया आपने? आइये बैठिये। (पिछली गली से पारस को आते देख कर) आइये डाक्टर साहब, मैं तो आपके यहाँ आने ही वाला था।

[पारस अन्दर की चारपाई डालकर बैठ जाता है। शेखर बैठने के पहिले कुर्सी पकड़ कर खड़ा हो जाता है।]

शेखर — प्रभात जी तीन मिलों में मालिकों ने ताला-बन्दी कर दी है। पन्द्रह हजार मजदूर बेकार हो गये हैं। दीवाली के मौके पर मालिकों का मजदूरों पर यह हमला नगर की शान्ति और व्यवस्था को टूक-टूक कर देगा।

पारस — सरकारी कमीशन ने तो ताला-बन्दी के नाम का विरोध किया है। फिर कैसे ताला-बन्दी हो गयी?

शेखर — यह ताला-बन्दी सरकार की बदलती हुई उद्योग-नीति के खिलाफ है!

पारस — तो सरकार मिलों पर कब्जा क्यों नहीं कर लेती?

प्रभात — अभी वह दिन दूर है डाक्टर साहब। हमारे देश का मजदूर आन्दोलन इतना संगठित नहीं है जो

सरकार को राष्ट्रीयकरण के लिए मजबूर कर दे।

शेखर : अभी मज़दूर आन्दोलन के एकजुट होने में अनेक बाधायें हैं। पिछले पाँच दिन से नगर में शान्ति-सम्मेलन हो रहा है। आज आखिरी दिन है। देश के हर हिस्से से आये हुए प्रतिनिधि नगर में मौजूद हैं। त्योहार के मौके पर मज़दूरों की तनख्वाह न दे मालिकों ने ताला-बन्दी कर दी है। अगर नगर में किसी तरह की अशान्ति होती है तो उसकी ज़िम्मेदारी मालिकों पर होगी।

पारस : मालिकों से पहिले सरकार पर है।

गोपी : (अब तक सुन रहा था बोला) माफ़ करियेगा साहब, बार-बार बीच-बीच में बोल रहा हूँ। शान्ति-अशान्ति की ज़िम्मेदारी मालिकों और सरकार पर है, क्या मज़दूरों पर नहीं है?

शेखर : मज़दूरों पर पहले है।

हीरालाल : तो फिर क्यों नहीं मज़दूर शान्ति कायम रखते। मगर वह बेचारे आप लोगों के मारे शान्ति से राज़ी आ सकें तब न।

शेखर : हम लोगों के मारे शान्ति से राज़ी नहीं आ पाते, तो उन्हें भड़का कर आप नेता बन जाइए। (सब हँस पड़ते हैं। हीरालाल आदि झेंपते हैं) आप हीरालाल मज़दूर जानता है कि कपड़े की पर्ची लगाने वाला हीरालाल एक दिन में कैसे लखपती बन गया।

गोपी (काँप मिलते हुए) भगवान देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है।

(सामने की गली से तेज साइकिल में सुरेश का प्रवेश)

सुरेश (साइकिल रोक चबूतरे पर पैर रख कर) जय हिन्द! मिल के सामने जुलूस पर लाठी चार्ज हो गया।

[सबके सब चौकन्ने हो जाते हैं। शेखर उठ खड़ा होता है। हीरालाल और गोपी मुस्कराते हुए इशारे करते हैं।]

शेखर : तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

सुरेश थाना न फोन किया है। कुछ लोग गिरफ्तार हो गये हैं।

शेखर : और जुलूस?

सुरेश आगे निकल गया है।

श्यामा चन्दू कहाँ है?

शेखर वह हाथों में है। चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। प्रभात जी मैं आपसे ताला-बन्दी के सम्बन्ध में बात करने आया था। पुलिस ने तो दूसरी परिस्थिति पैदा कर दी। अच्छा

[साइकिल पर पीछे बैठ जाता है। साइकिल के पीछे भागती हुई श्यामा जाती है।]

प्रभात मैं हर तरह मज़दूरों के साथ हूँ।

[फोन न मिलने पर गोपी हीरालाल तेजी में उतर कर सामने की घण्टी को बजाते हैं। टेलीफोन की घण्टी बजती है। पाँपू रिसीवर उठाकर सुनता है।]

पाँपू : हल्लो। हाँ शहर में गड़बड़ हो गयी।

(रिसीवर रख देता है।)

प्रमोद : (ताला बन्द कर) अभी नहीं आयी। अम्मा यह चाभी लो! चलो डाक्टर साहब।

[दोनों तेज़ी से सामने की गली से जाते हैं। श्यामा पीछे की गली से बड़बड़ाती आती है। पाँच सीढ़ियों पर उतरता-चढ़ता है]

श्यामा : रोज़-रोज़ लाठी-गाली, रोज़-रोज़ पकड़-धकड़ सब ग़रीब पर है। अमीरों को कोई नहीं पूछता।

कमला : (बाहर आकर आवाज़ देती है) श्यामा ? ओ श्यामा।

श्यामा : (द्वार खोलती हुई) क्या है श्यामा, ओ श्यामा ? इनके मारे तो और आफ़त है। फिर कोई ?

(बाहर आकर ऊपर देखती है।)

कमला : श्यामा चाभी के घर चला आया, कपड़े नहीं दे गया।

श्यामा : तुम्हें कपड़ों की पड़ी है, यहाँ आफ़त आ रही है। (रुक कर) चाबी कोई इस वक्त घर में बैठा होगा।

कमला : उसकी आदत तो होगी। उसी से कह आया।

श्यामा वह क्या करेगी बेचारी खुद सर्कलनाथ की मारी है। कहाँ आ जा भी तो नहीं सकती।

कमला : हमारे कपड़े तो दे जायेगी।

श्यामा : कपड़े निकाल सकती तो मैं ही ले आती। उसके बच्चा होने को था कहीं हो भी न गया हो।

(श्यामा फिर अन्दर जाने को होती है।)

कमला : क्यों श्यामा ? उसके तो कई लड़के हैं।

श्यामा : हाँ तीन-चार लड़के हैं।

कमला : (धीरे से) क्या तुम उससे

श्यामा : क्या है बहू जी, मैं नहीं समझी।

कमला : तुम नहीं समझी श्यामा बच्चे के लिए कह रही हैं।

श्यामा : बच्चे के लिए ?

कमला : हाँ श्यामा आज मेरा जी बहुत घबड़ा रहा है।

श्यामा : राई के कान पकड़ो बहू जी। यह बच्चा क्यों देने लगी। यह खुद कमाती है। आदमी कमाता है। कम सब बाट गयी है। भिखमंगे भी अपना बच्चा नहीं बेचते बहू जी—फिर वह तो ।

कमला : (हताश होकर) हे भगवान, अब तू ही रूठा है तो और किसको कहूँ।

[सामने की गली से उद्विग्न-सा मुकुन्द आता है। कमला मुकुन्द को देख फफक-फफक कर रो पड़ती है।]

मुकुन्द : अब लोने ठे टाम न टले दा। भैया उठ दुरैन मंदना ठे ब्याह टर रहे हैं।

[श्यामा बाहर निकल जाती है। शोभा सामने से आती है। अम्बी का प्रवेश]

अम्बी : हीरालाल किससे ब्याह कर रहे हैं ?

मुकुन्द : उठी मंदमा ठे टर रहे हैं।

शोभा : (सीढ़ियों पर चढ़ते हुए) यह सारी कारिस्तानी गोपी की है।

अम्बी : गोपी को न करे थाड़ा है।

कमला : (रोती है) हाय शोमा, मेरा तो करम फूट गया, क्या करूँ ! कहाँ जाऊँ ! कहाँ रहूँ ! मुकुन्द तुम मुझे ज़हर ला दो ! मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ !

शोमा : मामी ज़हर तो तुम्हारे बिना मँगाये आ रहा है। बाहर से मँगाकर क्या करोगी।

कमला : (रोते हुये) हाय मेरे नसीब में यही लिखा था।

शोमा : कि ज़हर खा कर मर जाओ। मामी ! लोहे से लोहा कटता है। ज़हर पीकर नहीं ज़हर बनकर ही ज़हर को मार सकती हो।

श्यामा : औरत जात बेचारी क्या करे।

शोमा : औरत तो हमारे यहाँ गीली मिट्टी का लोंदा है। उसे चाहे लम्बा करो, चाहे गोल।

श्यामा : यह सब तुम बड़े लोगों के यहाँ होता है। हम लोगों के यहाँ हो तो पचायत पड़ जाय।

[रोहित के साथ नीलिमा का प्रवेश। रोहित आँख बचाकर पीछे की गली से खिसक जाता है।]

शोमा : पैसे की रोशनी में आदमी अन्धा हो जाता है। फिर उसे ऊँच-नीच का पता नहीं रहता (नीलिमा को सम्बोधित कर) मामी इसी अंजना के बारे में तुमसे कहती थी। मेरे साथ कालेज में पढ़ती थी। बेड कांडक्ट पर निकाली गयी थी। अब मेरा घर सटम-सत्म करने जा रही है।

नीलिमा : क्या हुआ ?

शोभा : भाई साहब उससे अपना ब्याह रचा रहे हैं।

मुकुन्द : (कोने से फटा बाँस उठा, दीवार पर मारते हुए) हम रांड के पैर तोड़ डालेंगे (कमला से) तुम क्यों रोती हो, हम क्या मर गये हैं।

[नीलिमा साड़ियाँ लाकर गोटा लगाती है। पीछे की सड़क से दौड़ते हुए फायर ब्रिगेड के घण्टे की आवाज़ आती है।]

मुकुन्द : कहीं आग लग गई।

शोभा : अभी मजदूरों पर लाठी-चार्ज हुआ है, देखो तो मुकुन्द ! (श्यामा से) चन्दू कहाँ है ?

(मुकुन्द बाँस लिये नीचे भागता है।)

श्यामा : कहीं न कहीं होगा, मेरा भी दिल पत्थर का हो गया है। सहते-सहते आदत पड़ गयी है।

[पीछे की गली को जाती है। सामने की गली से लोग भागते हुए पीछे की गली को जाते हैं। शोभा के पीछे कमला अन्दर जाती है।]

अन्धी : न जाने दुनिया को क्या होता जा रहा है। मजूरों पर लाठी-चार्ज, ताला-बन्दी, न जाने क्या हो ?

[अन्दर जाती है। सामने की गली से प्रभात उत्साहहीन-सा आता है। नीलिमा को गोटा लगाते देख ठिठक जाता है। सर के बाल नोचता है। उसके मस्तक पर चोट-सी लगती है। तिलमिलाया-सा नीलिमा के पास आकर खड़ा हो जाता है। नीलिमा सर उठा कर प्रभात को देखती है और झुक कर काम में लग जाती है।]

प्रभात : (आवेश में आकर) नीलिमा !

नीलिमा : (सर उठाकर) जी।

प्रभात : (नीलिमा से आँखें मिलते ही नीलिमा के दोनों कन्धे

पकड़ कर खड़ा लेता है, आवेश में) नीलिमा, आदमी का मन गगनी का झरना है, धरती का कंपन है, भोर का मगन तारा है ।

(छोड़ देता है ।)

नीलिमा : (लजाते हुए) कितनी बार कहा कि किसी स्कूल में हो गयी होती तो इस तरह की दिक्कत न उठानी पड़ती ।

प्रभात : यह मेरी कमज़ोरी थी नीलिमा । व्यर्थ का स्वाभिमान था । यह जानते हुए भी कि इस काली-उजली दुनिया में बिना श्रम बेचे ज़िन्दा नहीं रहा जा सकता, जब-जब तुम मुझसे नौकरी के लिए कहती थीं ऐसा लगता था कि तुम मेरे व्यक्तित्व पर चोट कर रही हो ।

नीलिमा : इस तरह तो मैंने कभी नहीं कहा ।

प्रभात : मैं यह नहीं कहता कि तुमने इस तरह कहा । नीलिमा अखबार की नौकरी छूटने के बाद बेकारी की मुसीबतों ने मुझे ऐसा सोचने के लिए विवश कर दिया । कलम को बिकने से बचाया । क्योंकि वह मेरी नहीं देश की है । मनुष्यता की है । यदि मैं उसे नून, तेल, लकड़ी के काम लाता तो सेठों, साहूकारों और नेताओं के गीत गाता फिरता । और कहता सत्य धर्म है, धर्म मार्ग है और मोक्ष पैसा है । नीलिमा मुझे यह

दिन नहीं भूला जिस दिन हरखू की लाश निकली थी। नौकरी खो देने के बाद भी मुझे जो लोक-विश्वास मिला था मैं उसे कभी नहीं खो सकता। नीलिमा माया देकर भी मैं लोक-विश्वास की रक्षा करूँगा। (शम्भर जाने को है पीछे दूर से हजारों लोगों की आवाज़ आती है। प्रभात द्वार पकड़े सुनता है। 'मज़दूरों का वेतन दो—ताला-बन्दी ख़त्म करो।' शोर बढ़ता जाता है।) इसके माने है कि सभा होगी—जुलूस यादगार मैदान आ रहा है।

(शम्भर जाकर क्षण भर में वापस आता है।)

नीलिमा : मरे आ रहे हो? सुनो तो?

प्रभात : (नाराज़ होकर) सारी बातें इसी समय पूछ लेनी हैं। पन्द्रह हज़ार मज़दूरों और उनके परिवारों के मुँह की रोटी जा रही है।

नीलिमा हुँह अपनी आग तो बुझाई नहीं बुझती, दुनियाँ भर का ठेका लिये फिरते हैं। रोहित सुबह से परेशान किये है। त्योहार सर पर है।

प्रभात त्योहार! तुम भी त्योहार के पीछे पड़ी हो। देख नहीं रही हो, कैसा त्योहार हो रहा है। रोहित इधर-उधर न जाने पाये!

[सामने की बत्ती से जाता है। नीलिमा साड़ियाँ उठाकर अन्दर जाती है। स्टेज पर सन्नाटा छुपती आती है। टेलीफोन की घन्टी बजती है। अन्दर से पाँचू भाग कर आता है।]

पाँचू : (रिसीवर कान में लगा कर) हल्लो, हल्लो

[गोली चलने जैसी आवाज़ आती है। अन्धेरा बढ़ता जाता है।]

नीलिमा : गोली चल रही है।

अम्मी : हाँ गोली की ही आवाज़ है। जाने प्रभात कहाँ होगा!

पाँचू साला-मन्त्री न जाने क्या कर गुज़रे!

(बत्ती बुझा कर सामने की गली से जाता है।)

नीलिमा गरीबों की हर तरह मरन है।

अम्मी अन्धेर नगरी अनबूझ राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा! (रुक कर) इस राज में जो न हो जाय सो थोड़ा है।

[नीलिमा रोहित को अन्दर कर एक द्वार बन्द कर खड़ी हो जाती है। भीड़ का स्वर सुनाई देता है। चलो, चलो! आगे बढ़ो! बढ़ो, बढ़ो! नारों की आवाज़ों के साथ गोलियों की ठाँय-ठाँय सुनाई देती है। पिछली गली से हॉर्न की आवाज़, हीरालाल पाँचू को पुकारता प्रवेश करता है।]

हीरालाल : पाँचू! पाँचू! दौड़ के गाड़ी का सामान ला।

[पाँचू भागकर जाता है। फायरिंग की आवाज़ आती है। हीरालाल सीढ़ियों पर रुक कर सुनने लगता है। पाँचू सामान लिये घबराया-सा ऊपर आता है।)

पाँचू बाबू जी गोली चल रही है।

हीरालाल (ऊपर आकर) गोली नहीं टियर गैस है। अभी सब तितर-बितर हो जायेंगे। (पाँचू से) इन सब फिट कर दे! बार-बार सिखाने की जरूरत नहीं। (अन्दर जाते हुए) बड़ी मुश्किल में फँसा है।

पाँचू (स्वतः) ई बाबू जी समझत हैं कि हम बाबू मुकुटबिहारी का फौंसि लीन, पै मुकुटबिहारी बाबू यह सुर्राट है कि रोज इनके अइसेन का फौंसो करत है। हुँह।

आवाजें लो पानी लो। कपड़ा भिगोलो कपड़ा, उपर न जाना भाई।

(भीगे रुमाल से आँसू पोंछते हुए शोभा का प्रवेश।)

शोभा (गुस्से से भरी हुई) इन्हें शरम नहीं आती; डिमोक्रेसी-डिमोक्रेसी चिल्लाते हैं।

[परेशान-सी नजर आती है। सामने की गली से टियर गैस के धुएँ से व्याकुल लोग गीले-सूखे कपड़े मुँह में रखते पिछली गली को जाते हैं।]

एक आदमी : (क्रोध के साथ) सभा में रोक है तो मैदान में घेरा डालो। रास्ते बन्द कर पब्लिक को क्यों घेरते हो? जिसे देखो आँखें मल रहा है।

दूसरा आदमी : कई फैक्टरियाँ बन्द की गयीं।

तीसरा आदमी सुना है दुकानें भी लूटी गयी हैं। कई जगह लाठी चार्ज हुआ है।

आवाज : (सामने गली से) भागो, भागो पुलिस आ रही है।

[लोग भागते,निकल जाते हैं। दो सिपाही डण्डे लिये उधर दौड़ लिये हैं।]

चम्पी : हे भगवान् यह सब क्या हो रहा है।

श्यामा : (क्रोध के साथ) हत्यारे सबको अन्धा करके छोड़ेंगे। न जाने कहाँ का धुआँ है। आँखें फूटी जा रही हैं।

[द्वार खोल कर अन्दर आता है। पीछे की गली से प्रभात और पारस बातें करते आते हैं।]

पारस : मेरी समझ में नहीं आता कि सार्वजनिक सम्पत्ति क्यों नष्ट की जाती है।

प्रभात : कौन नष्ट कर रहा है ?

हीरालाल (प्रवेश के साथ) यह सब कुछ हड़ताली मज़दूर कर रहे हैं।

(बत्ती जलाता है, जो जलती-बुझती रहती है।)

प्रभात यह हड़ताली मज़दूरों का काम नहीं है।

हीरालाल : तो कहिये कि फ़ैक्टरियों के मालिक अपनी-अपनी फ़ैक्टरियों में आग लगा रहे हैं।

प्रभात यह सब कुछ कर सकते हैं। अपने मुनाफ़े के लिए मज़दूरों में दंगा करवाते हैं उनमें फूट डालकर अपना-अपना उल्लू सीधा करते हैं। मज़दूरों को कलंकित करने के लिए कारखानों में आग लगा देते हैं। बीमा कम्पनियों से रुपया वसूल करते हैं।

पारस : (जाते-जाते) कुछ भी हो, हमारे नगर का जीवन त्योहार के मौक़े पर अजीब उलझन में पड़ गया है। (रुक कर) हम चलते हैं प्रभात।

प्रभात देख-भाल के जाना। (नीलिमा से) रोहित कहाँ है ?

(पारस निकल जाता है।)

नीलिमा अन्दर है। मेरी तो जान सूख रही थी।

पाँचू (स्वतः) ई बाबू भी समझत हैं कि हम बाबू मुकुटबिहारी का फाँसि लीन, पै मुकुटबिहारी बाबू यह खुराफ हैं कि राम इनके अग्रसेन का फाँसो करत है। हुँह!

आवाजें लो पानी ला! कपड़ा भिगालो कपड़ा, उधर न आना भाई!

(भोले रूमाल से आँसू पोंछते हुए शोभा का प्रवेश।)

शोभा (गुस्से से भरी हुई) इन्हें शरम नहीं आती छिमोके सी-निमोके सी चिल्लाते हैं।

[परेशान-सी भगदड़ आती है। सामने की गली से दिमाग कर्मों के धुएँ से व्याकुल लोग भोले-भूले कपड़े मुँह में रगड़ते पिछली गली को जाते हैं।]

एक आदमी : (प्रवेश के साथ) सभा में रोक है तो मैदान में घेरा डालो! रास्ते बन्द कर पब्लिक को क्यों घेरते हो? जिसे देखो आँखें मल रहा है।

दूसरा आदमी : कई फैक्टरियाँ बन्द हो गयीं।

तीसरा आदमी सुना है दुकानें भी लूटी गयी हैं। कई जगह लाठी-चार्ज हुआ है।

आवाज (सामने गली से) भागो, भागो पुलिस आ रही है।

[लोग सामने-गिरते जाते हैं। दो सिपाही डण्डे लिये उनका पीछा किये हैं।]

अम्पी : हे भगवान् यह सब क्या हो रहा है!

श्यामा : (प्रवेश के साथ) हत्यारे सबको अन्धा करके छोड़ेंगे। न जाने कहाँ का धुआँ है। आँखें फूटी जा रही हैं।

[हार खोल कर अन्दर जाता है। पीछे की गली से प्रमात और पारस बात करते आते हैं।]

पारस मेरी समझ में नहीं आता कि सार्वजनिक सम्पत्ति क्यों नष्ट की जाती है।

प्रमात कौन नष्ट कर रहा है?

हारलाल (प्रवेश के साथ) यह सब कुछ हरताली मज़दूर कर रहे हैं।

(बत्ती जलाता है, जो जलती-बुझती रहती है।)

प्रमात यह हरताली मज़दूरों का काम नहीं है।

हीरालाल तो कहिये कि फ़ैक्टरियों के मालिक अपनी-अपनी फ़ैक्टरियों में आग लगा रहे हैं।

प्रमात वह सब कुछ कर सकते हैं। अपने मुनाफ़े के लिए मज़दूरों में दंगा करवाते हैं, उनमें फूट डालकर अपना-अपना उल्लू सीधा करते हैं। मज़दूरों को कलंकित करने के लिए कारखानों में आग लगा देते हैं। बीमा [illegible] कम्पनियों से रुपया वसूल करते हैं।

पारस (धन-भाव) कुछ भी हो, [illegible] मार नगर का जीवन त्योहार के मौक़े पर भयंकर [illegible] मुसीबत में पड़ गया है। (रुक कर) हम भगवत [illegible] है प्रभात।

प्रमात : हम-माल के माना। ([illegible] [illegible]) में इन क्यों है?

(पारस निकल [illegible] [illegible] नहीं है।

नर्मिमा सुन्दर है। मरी तो बन?

[दोनों अन्दर जाते हैं। सामने की गली से कार और हार्न की आवाज़ आती है। गोपी एक उतरी उम्र के आदमी के साथ प्रवेश करता है। हीरालाल टेबुल सजाने में लगा था, दोनों को आते समझ कपड़े भाड़ कर ऊपर की सीढ़ी पर स्वागत के लिए आ खड़ा होता है।]

हीरालाल आइये गोपी बाबू! आइये, नमस्ते, बैठिये-बैठिये। (कुर्सियों की तरफ इशारा करता है। दोनों के बैठने पर स्वयं कुर्सी पर बैठ जाता है।) आपने बड़ी कृपा की है।

गोपी अरे, बात-चीत होने लगी और मैं परिचय कराना ही भूल गया! आप मेरे दोस्त बाबू हीरालाल जी हैं और आप पं० मुकुन्दबिहारी अंजना के पापा हैं। यों तो इनके बारे में तुम्हें पहिले ही मैं कुछ बता चुका हूँ, इन्होंने ही अंजना को पढ़ाया-लिखाया।

हीरालाल आइये हम लोग इस व्यापार में लग जायें। दीवाली का त्योहार मनायें, फिर बातें तो चलती ही रहेंगी।

मुकुन्दबिहारी (मूँछों को हिलाते हुए) हमारा-तुम्हारा सम्बन्ध पक्का हो गया है, तो अब सब कुछ होगा।

हीरालाल हाँ हाँ कहिये उठाइये!

[सब अपने-अपने गिलास उठाते हैं। एक-दूसरे के गिलास स्पर्श कर देते हैं। सब भर [illegible] सिगरेट और शराब के दौर चलते जाते हैं।]

हीरालाल (बाँह से बाँह में) तुम भी बैठो ? भरो, भरो बार में [illegible] ला लाना।

पाँचू : हाँ, हाँ बाबू जी !

गोपी : हाँ, हाँ ठीक है।

कुञ्जविहारी यहाँ पु, पु, पुलिस का डर भी नहीं है।

हीरालाल पुलिस-उलिस कुछ नहीं—रुपये में यह करामात है कि बड़ों-बड़ों के सिर पर चढ़ कर बोलता है, और सब उसे देख कर, हीं, हीं, हीं, हा करते हैं।

[सब हँस पड़ते हैं। पीछे की गली से आकर कोई प्रभात को द्वार पर आकर बुलाता है।]

आगन्तुक : प्रभात जी ! ओ प्रभात जी।

भाभी : कौन है।

आगन्तुक मैं हूँ, प्रभात जी से मिलना है।

श्यामा (बाहर आकर इधर-उधर देखती है। सामने खड़े आदमी को देखकर) न जाने कहाँ गया। भाभी ? तुमने सुना कि नहीं चन्दू की आवाज़ लगती थी।

हीरालाल : (मज़े में खड़े होकर) चन्दू ? चन्दू, हवालात में दिवाली मना रहा होगा।

श्यामा चलो तुम्हें तो खुशी है। एक दिन हमारी बेरी में भी घेर आयेंगे।

हीरालाल हा हा हा हा हा—जब आयेंगे तब देखा जायगा —क्यों न गोपी बाबू अभी तो

(लालटेन लिये प्रभात का प्रवेश)

प्रभात (चन्दू को पहिचान कर) अरे तुम, मैं तो समझता था कि तुम

[पन्नू मुँह पर उँगली रखकर रोक देता है। और जेब से पत्र निकाल कर प्रभात को देता है। प्रभात पत्र पढ़ता है। सामने की गली से सिपाही और दरोगा का प्रवेश]

दरोगा (श्यामा को देखकर) पन्नू कहाँ गया ?

श्यामा : अरे दरोगा जी तुम्हीं बता दो मेरा पन्नू कहाँ है ? कोई कहता है गोली लगी है, कोई कहता है अस्पताल में है। ये पंडित कहते हैं हवालात में है।

दरोगा अभी पकड़ नहीं मिला, फरार हो गया है।

श्यामा अब जान में जान आयी दरोगाजी।

दरोगा (सिपाही से) चलो अभी कहा न कहीं मजदूर मजदूरों में मिल जायगा। कहीं उसने ज़मीन सूँघ ली तो मिलना मुश्किल है।

[दोनों पिछली गली को जाते हैं। श्यामा प्रभात से कुछ कहने जाती है।]

गांधी : (हीरालाल से धीमे में) तुम तो कहते थे कि पन्नू हवालात में है। यार तुम भी नशे की झोंक में आ गये। दरोगा कहता है कि पन्नू फरार हो गया—कहीं ज़मीन न सूँघ ले।

हीरालाल : यह कौन-सा रोग है, ज़मीन सूँघने वाला।

गांधी : अरे तुम उल्टा समझ रहे हो। आदमी नहीं ज़मीन सूँघता ज़मीन आदमी को सूँघती है।

हीरालाल यह कभी नहीं हो सकता कि ज़मीन आदमी को सूँघ ले।

श्यामा (पत्र समाप्त होते ही) प्रभात जी, चन्दू यहाँ हो खबर कर दो। पुलिस उसका पीछा कर रहा है।

प्रभात (हँसते हुए चन्दू को इशारा करता है) मैं अभी खबर किए देता हूँ।

श्यामा (पहिचान कर) अरे तू है। मैं तो पहिचान न सकी, भाग-भाग यहाँ से जल्दी।

हीरालाल : (चिल्ला उठता है) अरे बदल यह चन्दू है चन्दू! पुलिस पुलिस, पुलिस को खबर दो'

(चन्दू तेजी के साथ निकल जाता है)

श्यामा पुलिस-पुलिस चिल्लाओ खूब—चन्दू गया, हुँह—

[हार खोलकर अन्दर जाती है। हीरालाल और मोती मन में पटाखे चलाते और फुलझरी छुड़ाते हैं। पटाखों की आवाज सुन अन्दर से रोहित भाग कर आता है।]

रोहित : पिता जी हम भी पटाखे लेंगे।

प्रभात आज छोटी दिवाली है। बड़ी दिवाली को ले आयेंगे

(सामने की गली से बसन्ती का प्रवेश)

रोहित : फुलझरी लेंगे—हैं हैं हैं हैं हैं।

(हाथ-पैर पटकता है।)

गाथा (दिखाते हुए) ला—ला यह फुलझरी ले आयो।

(रोहित लेने के लिए आगे बढ़ता है)

प्रभात (हाथ पकड़कर कर घसीट लेता है। जोर से) बेवकूफ कहीं का, उधर गया तो उठा के पटक दूँगा।

कलंकी   बस-बस रहने दीजिये, बच्चा है प्रभात जी !
(उठ कर) नमस्ते (पास पहुँच कर) मैं तो समझता था कि आज आप शायद ही मिलें पर आप मिलते क्यों नहीं जब कि मैं लगन पूछ कर चला था।

(हीरालाल मोदी दोनों कुम्भारी और पटाके छुपा रहे हैं।)

प्रभात : आइये बैठिये।

कलंकी : आप भी बैठिये—बिना बैठे कैसे बात हमगी ? मैं जिस काम के लिए आया हूँ वह खड़े-खड़े नहीं, बैठ कर ही किया जा सकता है। आप पूछेंगे कि वह कौन-सा काम है।

प्रभात : कविता लिखवानी है।

कलंकी : धन्य-धन्य, आपने तो मेरे मन की बात कह दी।

प्रभात : आपका शुभ नाम ?

कलंकी   मेरा नाम शुभ नहीं है, कहा जा !

प्रभात   तो अपना अशुभ नाम ही बता दीजिये।

कलंकी   आप कहेंगे कि क्या भी नाम है—मैं मैं बताये देता हूँ—मेरा नाम कलंकी है। अब आप कहेंगे, क्यों कहेंगे ? मैं पहिले ही कह देता हूँ। मैं दूरपर जा बन जा, बरी, नीले मरस बालों के यहाँ से आया हूँ। उनके लड़के का ब्याह है। आपको एक सहरा लिखना है।

प्रभात : मैं इस तरह का काम कभी नहीं करता।

कर्मकी : कोई मेहनत का काम नहीं है प्रभात जी। इधर उधर कलम मारनी है। लड़के के बाप का नाम ईश्वर जी लड़की के बाप का नाम नरबामल, लड़की का नाम सुमित्रा और लड़के का नाम गोविन्ददास है।

प्रभात क्या बकते हो? कह दिया कि यह काम मुझसे नहीं हो सकता।

हीरालाल लीजिये-लीजिये बाबू जी—बस थोड़ी-सी कमना के नाम—पापी बाबू यह लाल परो का माच है। ला पियो चा पा जी।

[पढ़ कर पटाखा छूटता है। रोहित फिर अन्दर से भाग कर आता है, पटाखा छूटते देखता है।]

रोहित : हूँ हूँ पिता जी हम फुलझड़ी लेंगे।

कर्मकी त्योहार का दिन है। लड़का पैसे माँग रहा है। चूकिये नहीं सौ रुपया मिल जायगा।

हीरालाल (नशे को झोंक में) दीवाली आयी सजनी बोवाली आयी।

कर्मकी चूकिये नहीं प्रभात जी सौ रुपया—

प्रभात (विस्मित होकर) सौ रुपया (हूटते हुए) अच्छा, अच्छा हाँ हाँ, रोहित को फुलझड़ी चाहिये, साल भर का त्योहार है। अच्छा अच्छा। खुश होने पर सेठ जी ज्यादा से ज्यादा

हीरालाल : पा पा जी मैं कहता था न, कि रुपया आदमी के सर पर चढ़कर बोलता है।

[नीलिमा द्वार की आड़ में खड़ी सुन रही थी। हीरालाल का व्यंग उसे तीर की तरह लग रहा है।]

हीरालाल : देखो देखो गोपी! रुपया आदमी के सर पर चढ़कर बोल रहा है।

कलंकी : तो तैयार है आप लिखने के लिए?

प्रभात : हाँ।

(गुमसुम हो जाता है।)

नीलिमा : (झपट कर बाहर आ जाती है) नहीं! नहीं (रोहित को पकड़ कर) हमें ऐसे रुपये नहीं चाहिये। खबरदार जो अब कुछ

कलंकी : नहीं चाहिये पैसा।

नीलिमा : नहीं! जाओ यहाँ से !

प्रभात : हाँ जाओ। जाओ, कला बिकती नहीं—संजीवनी बनती है।

(कलंकी जाता है।)

हीरालाल : (हीरालाल के साथ गोपी आदि भी हँसते हैं) हा, हा, हा।

[परदा गिरता है]

—

तृतीय अंक

प्रथम दृश्य

[वही प्रथम अंक का दृश्य, बरसाती मौसम, रात्रि के अन्तिम प्रहर के प्रथम चरण में प्रमथ लालटेन जलाये कुछ लिख रहा है। होरालाल के यहाँ हरे बल्ब के मद्धिम प्रकाश में, पोंचू मेज़ पर पड़ा सो रहा है। प्रमथ लिखता है, सोचता है। फिर टहलने लगता है। गुनगुनाता हुआ बैठकर धीरे-धीरे पढ़ता है और मेज़ पर सर रख कर सो जाता है। पोंचू के सर के पास टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है। पोंचू कुनमुना कर उठता है]

पोंचू (रिसीवर उठा कर) न दिन देखें न रात जब चाहिन नम्बर घुमाय दिहिन। हलो! किसको बुलायें! अच्छा!

[रिसीवर रख कर अन्दर जाता है। सामने की गली से दो आदमी पोस्टर-सामग्री लिये आते हैं। प्रमथ की दीवार पर सीढ़ी लगाकर इश्तहार चिपकाते हैं। धीरे-धीरे आपस में बातें करते हैं।]

पहिला : कुछ भी हो हम फाकन में न करेंगे।

दूसरा फोकट नहीं है, इसकी तनख्वाह मिलेगी।

पहिला : कहाँ से मिलेगी, मिल से ?

दूसरा : मिल से नहीं! एक्शन कमेटी से।

पहिला : यह कहाँ है ?

दूसरा हो चाहे जहाँ, पर मिल में अख्तार बाबू इसका काम देखते हैं।

[इश्तहार लगाकर दोनों पीछे की गली से जाते हैं। पोंचू के साथ

हीरालाल रात्रि के निवास में प्रवेश करता है। कमरों की भनक या गली में झाँक कर देखता है।]

हीरालाल (रिसीवर कान में लगा कर) हलो! जी हाँ म हूँ। (पाँचू से) जा रख्य सो पाँचू यह कौन लाग गये हैं। हाँ, हाँ हा सकता है कहीं लाग हां। हाँ जी इश्तहार लगाये जा रहे हैं! अच्छा, अच्छा (सुनता है) हाँ हाँ, कांग्रेस की दर उठ गयी है? वो जी आपने वह दफा सा नाम बताया था, हाँ अब धीरे-धीरे सब इसमें शामिल हो जायेंगे। जी हाँ यह सा रेंगने गयी है। (सुनता है) हाँ अच्छा—अभी आय और अभी चल भी जायेंग' हाँ, हाँ, गाड़ी का समय है। अच्छा हाँ हाँ मैं गाड़ी निकल वाला हूँ। हाँ, हाँ, जी, जी (सुनता है) ब्यालिस का क्रान्ति का हीरो—इसमे बड़ी गारन्टी और क्या हो सकती है। (पाँचू से) जाओ पाँचू ड्राइवर से कहो गाड़ी निकाले।

[रिसीवर रखकर प्रसन्नता में टहलता है। पाँचू पीछे की गली से जाता है। हीरालाल सिगरेट सुलगा कर अन्दर जाता है। वापस आकर ड्रावर में बन्द रखता है। सामने की गली से मुकुट बिहारी के साथ सोशलिस्ट वेष-भूषा में फ्रेंच कट दाढ़ी रखाये एक व्यक्ति प्रवेश करता है]

प्रजापाल : (मुकुट बिहारी से धीरे-धीरे) अच्छा' प्रभात यहाँ रहते हैं। रिटेन्शन कैंप में मर साथ थे।

(घड़ी देखकर ऊपर जाते हुए) गाड़ी का समय है। यहाँ दर न

हीरालाल आइये ! नमस्ते !

(स्वागत करता है।)

मकुटबिहारी (प्रजापाल से) आप हीरालाल जी हैं। मेरी मनीजी भर्जना इन्हीं के साथ है।

प्रजापाल : सो रही होगी। नहीं अब तक—

हीरालाल दर में सायी थी। (प्रजापाल से) आप धन्य हैं हमारी स्वाधीनता के नायक, लेकिन डर है कि हम छोटी-छोटी मछलियों को बड़ी-बड़ी मछलियाँ न खा जायें।

प्रजापाल अब छोटी बड़ी बातों के लिए खतरा पैदा हो गया है। यहाँ समाजवादी समाज बनाने की परिस्थितियाँ समाजवादी हुई जा रही हैं। (घड़ी देख कर) समय हो गया चलें। रास्ते में—

[मुकुट बिहारी, संकेत द्वारा हीरालाल को अलग ले जाकर कान में कुछ कहता है। हीरालाल उदास होकर कुछ सोचने लगता है। प्रजापाल हीरालाल को उदास देखकर मुकुट बिहारी को कनखी मारता है।]

मुकुट बिहारी इसमें अधिक सोचने की जरूरत नहीं है।

प्रजापाल समाजवादी समाज बनाने वालों को संगठित हो जाना चाहिये। अब देर करने का समय नहीं है।

(हीरालाल ऊपर से चेक-बुक निकालता है।)

मुकुटबिहारी : अब में रख लो। रास्ते में काट देना।

[हीरालाल को लगता है कि वह बोर हो रहा है। तुरन्त मेज पर कुछ लिखता है और मोड़कर प्रभापाल की जेब में डाल देता है।]

हीरालाल : आपकी यही तस्वीर अखबारों में छपती है।

प्रभापाल : (समझ कर) अब तो बहुत से लोगों ने मेरी नकल कर ली है।

[तीनों सामने की गली से जाते हैं। स्टेज के पीछे से मुर्गे की आवाज सुनाई देती है। प्रभात सँभल कर बैठ जाता है। लालटेन की बत्ती बढ़ाकर लिखने लगता है। लिखकर गुनगुनाता फिर लिखने लगता है। सोचता-लिखता रहता है; लालटेन की सूखी बत्ती धुँआ फैलाने लगती है। प्रभात को लिखने के आगे बत्ती का ध्यान नहीं रहता है। और अब बत्ती भभकती भी नहीं रह जाती, दिखाई देने लगता है। सामने की गली से धुँआ आता है। इधर बढ़ा आता है। प्रभात धुँए को देखकर सिसकने लगता है। अन्दर से नीलिमा आवाज देती आती है।]

नीलिमा : अरे! बत्ती सुलग रही है। (रुक कर) सुनते हो, बत्ती नीची कर दो!

प्रभात : (सर उठाकर लालटेन की ओर देखते हुए) यह भी सरकार से कम नहीं है।

नीलिमा : क्या मतलब?

प्रभात : या न जलती है न बुझती है। (चौंक कर) अन्तिम बात भी आ गयी। (लिखता है) लाठा सनकेगा, ठनकेगा, नाचेगा, गमेगा।

नीलिमा : अच्छा सा आज कितने दिनों बाद कविता लिखी है। (रुक कर) काहे पर लिखी है?

प्रभात : लाठा और सुग्गर दोनों पर है। सुनो!

(कविता पढ़ता है।)

चला चौकनी।
कुन्द कुदालों को गरमा कर पैना कर दूँ।
पानी धर दूँ।
लोहे में भी आत्मा भर दूँ।
जन जीवन उत्साहित कर दूँ।
श्रम सार्थक हो सृजन पर्व का,
श्रम सार्थक हो नये वर्ष का।
लोहा खनकेगा ठनकेगा
बोलेगा—बजेगा।

(कविता के समाप्त होते ही बाहर से रोहित का प्रवेश।)

रोहित : (प्रवेश के साथ) पिता जी आज फीस दे दीजिये। मास्टर साहब बहुत नाराज होते हैं।

प्रभात : आज कोई न कोई प्रबन्ध करूँगा।

नीलिमा : दो महीने की फीस हो गयी तुमसे कहते थे। मैं क्या करूँ? तुम जाके मास्टर से कह आते। (रोहित से) चलो तुम्हें खाने को दे दूँ।

[नीलिमा बाहर जाती है। रोहित प्रभात को फीस-कार्ड देता है।]

रोहित : ग्यारह रुपये पानवे पैसे।

प्रभात : (कार्ड देखता है।) रेडियो-फीस, परीक्षालय-फीस, पुस्तकालय-फीस, मेडिकल फीस, स्काउटिंग-फीस, गेम-फीस (झल्लाहट दबाकर) मास्टर साहब से कहना दो-एक दिन में जरूर दे देंगे।

[रोहित नाराज़ ही कर अन्दर चला जाता है। प्रभात विचलित होकर घूमने लगता है। स्टेज के पीछे से बिगुल की आवाज़ आती है। शोभा अन्दर से आकर टेबुल पर कुछ लिखती है। प्रभात मेज पर सर रखकर कुछ सोचने लगता है। श्यामा अपने गैराज से निकलती है। फिर बिगुल की आवाज़ आती है।]

श्यामा : यह बिगुल कहाँ बज रहा है।

शोभा : यहाँ पत्रों के भूखे पदयात्रा को आ रहे हैं।

श्यामा : यह पदयात्रा क्या है ?

शोभा : यात्राएँ बहुत होती हैं—तीर्थयात्रा, रथयात्रा, रणयात्रा।

श्यामा : और शवयात्रा भी तो होती है।

शोभा : समाज का धोखा देने का ढोंग है। यहाँ से कारों पर आयेंगे, वहाँ गाँवों में पहुँच कर पद-यात्रा करने लगेंगे।

[शोभा फिर लिखने लगती है। प्रभात की अन्तराग्नि धधक उठती है। वह उठ कर बैठ जाता है।]

प्रभात : हम युग में भी सर्वोदयवाद के पुरोहित, ग्रामीण जनता की आँखों पर पट्टी बाँधना चाहते हैं। जनता में अंकुरित होते हुए उत्साह, साहस और मनोबल को पदयात्राओं से कुचल देना चाहते हैं।

[प्रभात अन्दर जाने को है। श्यामा अन्दर जाती है। सामने की गली से सार्दलिक द्वारा सुरेश का प्रवेश।]

सुरेश : (अन्दर जाते देखकर) प्रभात जी, प्रभात जी !

प्रभात (मुड़कर) तुम आ गये कामरेड सुरेश, अब मुझे अभी न जाना पड़ेगा। (पम्फलेट) लेते आये। छप गये हैं।—ये तो निकल गये होंगे ?

(झोले से निकाल कर पम्फलेट देता है।)

सुरेश ये कभी के निकल गये। बहुत पसन्द किये गये हैं। बेकारी और गरीबी मिटाओ आन्दोलन को बड़ा बल मिल रहा है। जो जनता चाहती है वही आप लिखते हैं। प्रभात जी, ये पर्चे १८५७ के 'कमल और रोटी' का काम करते हैं। मैं चलता हूँ। नमस्ते !

[सुरेश साइकिल द्वारा सामने की गली से जाता है। श्यामा आकर चन्दू की राह देखती है। प्रभात अन्दर जाता है। बिगुल की आवाज आती है। सामने की गली से चन्दू प्रवेश करता है।]

श्यामा : मैं समझ रही थी अभी तक नहीं आया कहीं पदयात्रा को तो नहीं चला गया !

(शोभा हँसती हुई खिड़की खिसकाती है।)

चन्दू : यहीं क्या कम पदयात्रा करनी पड़ती है। पदयात्रियों को देखने लगा, देर हो गयी। जानती है पदयात्रा में कौन-कौन आ रहे हैं !

शोभा (सीढ़ी से उतरते हुए) कौन-कौन आ रहा है ?

चन्दू सब एक से एक धुरन्धर हैं।

शोभा आखिर कौन-कौन है ?

चन्दू : हजारीमल, हीरापराम, बहुरूपजी, अफसरबाबू पम्पस

माइ गाँव वालों का कुछ भला हो या न हो पर शहर के लोग इन्हें त्यागी, तपस्वी समझने के लिए मजबूर हो जायेंगे।

श्यामा : हीरालाम कौन ? लाला के लड़के !

चन्दू : हाँ ! मरी रुपया नेता बन गया है।

[भन्दर से मुकुन्द शोभा को आवाज़ देता प्रवेश करता है।]

मुकुन्द : शोभा ! शोभा ! वो तुलैल फिर मामी से लड़ने लगी।

शोभा : (जाते-जाते रुक कर) मैं क्या करूँ, मामी से कह आयी थी कि तुम न लड़ना। अंजना तो इस घर का चौका करने में लगी है। मुझे पढ़ाने जाने की देर हो रही है। पहिला घंटा है।

मुकुन्द : भगवने टूट रहा तो हम हाठ पैर ढाह डारेंगे। ढाह माइ माइ में लड़ाई हो जाय। हाथा टे ढा हम बजार जा रहे हैं। पाँड़े पाँड़े दादा ! भाभो हम टलटे हैं।

[शोभा बाहर होकर अन्दर जाती है। मुकुन्द के पीछे पाँडू बोड़ता जाता है। चन्दू और श्यामा कमला की परिस्थिति पर संकेत करते अन्दर जाते हैं। सामने की गली से १०-१२ वर्ष का बालक पुस्तकें लिए प्रवेश करता है।]

बालक : (श्यामा के द्वार पर जाकर) श्यामा घर में पानी नहीं है जल्दी डाल जाया।

श्यामा : (बाहर आकर) घर में पानी नहीं है तो मैं क्या करूँ। पैसा देने के लिए तो मुँह चुराते हैं; आज

नहीं, कल ! रोज़-रोज़ इनका आज-कल होता रहता है।

बालक मैं नहीं जानता, मुझसे कहा था कह आ रहा हूँ।

(बालक वापस जाता है।)

श्यामा हुँह, जैसे हमें नोन तेल लकड़ी न चाहिये। दूकानदार दामाद लगता है जो मुफ्त में दे देगा।

चन्दू (बीड़ी सुलगाते हुए बाहर आकर) कौन था ?

श्यामा : मुरली बाबू का लड़का।

चन्दू : मिल बन्द है; क्या करें बेचारे।

श्यामा : मैं तो कब से सुन रही हूँ कि बन्द मिलों को मज़दूर चलायेंगे।

चन्दू : मज़दूर चलायेंगे जब चलायेंगे। अभी तो कई मिलों में 'प्लेआफ' चल रहा है। काटन और जूट की कई एक शिफ्टें बन्द हो चुकी हैं। मज़दूर मारे-मारे घूम रहे हैं। मिल-मालिक पंच-फ़ैसला मानने से इन्कार कर रहे हैं।

श्यामा जब सरकार के बीच तय हो गया है तब क्यों इन्कार करते हैं। अधिकारी—

चन्दू : अधिकारी मिल-मालिकों की साँठ-गाँठ में हैं। मालिक षड्यंत्र रचने में लग हैं।

श्यामा जानते हो तो षड्यंत्र का भंडाफोड़ क्यों नहीं करते ?

चन्दू : भंडाफोड़ न होता तो बच सके—

[बातें करते हुए बन्नू और श्यामा अन्दर आते हैं। अन्दर से शोभा बड़बड़ाती तेज़ी से आती है, फ़ोन का डायल घुमाती है।]

शोभा : उसने कहा, मां तुम्हारी छठी-छम्मी न जानता हो। (फाड़ कर नम्बर मिलाते हुए) तुम मुझे एक कहानी चार सुनोगी। (रिसीवर कान में लगाकर) हलो, हलो !

[शोभा घड़ी सुनती है। चुस्ती सलवार पर चमकी स्वेटर पहिने कन्धों पर भोला दुपट्टा डाले, गुस्से में जूड़ा बाँधती हुई अंजना का प्रवेश]

अंजना : तुम मुझे नहीं जानतीं। अंजना यह बड़ों के ढक्क छुड़ा चुकी है। तुम्हारी क्या बिसात है।

शोभा : (रिसीवर में हाथ लगा कर) हलो ! कुसुम ! मैं शोभा बोल रही हूँ। ज़रा मेरा क्लास रूम लाना लड़कियाँ कोई गड़बड़ न करें। मैं आ रही हूँ।

(सामने की गली से हीरालाल का प्रवेश।)

अंजना (हीरालाल को देखते ही) सब दमत-सुनत हो, मानते नहीं मनता ? आज फिर सुबह से यह पीछे लगी है।

शोभा : तुम लड़ने पर आमादा हो। मेरे पास लड़ने के लिए समय नहीं है (पुस्तकें उठाकर) आओ मैं चला। यहाँ तुमसे न उलझा।

हीरालाल : (ज़ोर से) शोभा !

शोभा : मैं इनका लिया नहीं खाती ! मामन करती हूँ।

अंजना सुनिए—!

हीरालाल : शोभा तुम्हें कुछ अदब का भी ख़याल नहीं है।

गोपी : मैंने सोचा कि तुमसे राय ले लूँ। हाँ तुम कहाँ नहीं आये !

[श्यामा बड़े निकाल कर बाहर रखती है। अंजना दो गिलासों में बादाम का शर्बत लाकर दोनों को देती है। फिर एक गिलास पीती हुई जाती है।]

हीरालाल : नहीं आ पाया।

गोपी : ऐसे अवसरों पर पेहर देखे जाते हैं।

हीरालाल : ठीक है लेकिन—

गोपी : लेकिन-वेकिन क्या ? बड़े-बड़े क्रान्तिकारी मूहाना बन गये हैं तुम्हें पदयात्री बनने में क्या हर्ज है। मैंने तुमसे पहिले ही कहा था, तुमने अपना नाम न दिया। दो-चार दिन की बात थी। सौरभ ने कहा है कि हीरालाल से कहना अगली पद-यात्रा में अपना नाम लिखा दें।

हीरालाल : (गिलास खाली करते हुए) नाम तो कभी लिखा सकते हैं। पदयात्रा दफ्तर तो खुला ही होगा (अंजना से) तुम क्या सोचती हो ?

अंजना : (बाहर आकर) मैं ! छि छि मैं ऐसा काम नहीं करती।

गोपी : इस पुनीत काम में जरूर शामिल होना चाहिये। दो-चार दिन की पदयात्रा में नाम हो जायगा। आगे बड़े मौके हैं।

अंजना : अच्छा गोपी बाबू, तुम भी अपना नाम लिखाओ।

तुम्हारे बिना पदयात्रा में मज़ा न आयगा ।

गोपी : तुम कहती हो तो मैं भी लिखा दूँगा ।

अंजना : पर यह बताओ कि इस पदयात्रा से जेलयात्रा का लाभ तो नहीं होता ।

गोपी : जेलयात्रा का लाभ तो नहीं पर बड़े-बड़े लाभ होते हैं । (हीरालाल से) हाँ तीरथ नंगे पैरों पद-यात्रा में गया है । मैंने पूछा तो कहने लगा कि चप्पल झोले में रख लिये हैं ।

[तीनों हँसते हुए सामने की गली से जाते हैं । श्यामा अब तक खड़ी सुन रही थी]

श्यामा : चन्दू ! चन्दू ! ये लोग पदयात्रा के लिए नाम लिखाने गये हैं ।

चन्दू : (अन्दर से) तो मैं क्या करूँ ! तुझे भी लिखाना हो तो जा मुझे सोने दे ! रात फिर ड्यूटी पर जाना है ।

श्यामा : सोना ! काहे रोके है । अन्दर से जंजीर लगा ले ! (चौंककर) अरे यह दीवार में काहे पर्चा चिपका गया है ! (दृष्टि दौड़ाकर) देश-द्रोही गद्दारों से होशियार ! (देखते हुए) क्रान्तिकारी 'एक्शन कमेटी का ऐलान' अरे क्या फिर कुछ होने वाला है । बड़े बड़े हरफों को तो मैं खींच सकी छोटे-छोटे आके पढ़ ले ।

चन्दू : (अन्दर से निकलते हुए) क्या कुछ होनेवाला है

उसे मज़दूर जानता है। अब उसे गुमराह नहीं किया जा सकता। अब वह नयी ज़िन्दगी देने वालों की कतार में खड़ा है। शान्ति-सुरक्षा की 'गारन्टी' उसके हाथ में है।

[बन्नू उचक कर पर्दा देखता है। श्यामा देर होने का भाव प्रदर्शित कर पीछे की गली से जाती है। प्रभात कमरे से निकलता है। सामने की गली से हीरालाल प्रवेश करता है।]

हीरालाल (प्रवेश के साथ) तुम लोग ज़रा मैं ज़रा पर्दे का मज़ा ले लूँ। (पर्दा पड़ना शामिल होता है।)

बन्नू (गली से हीरालाल को आते देख, प्रभात से) प्रभात जी, देखते हैं न यह भी कुछ हो रहा है!

प्रभात अब, देश की जनता पूँजीवाद की कुण्डली देख चुकी है।

(टेलीफोन की घंटी बजती है।)

हीरालाल (अट्टहास करते हुए) देश की जनता पहले अपनी कुण्डली देखे (रिसीवर कान में लगाकर) फिर दूसरों की—हलो! हलो! बाबा जी भंभना पहुँच गया मैं गाड़ी लिये आ रहा हूँ (प्रभात बन्नू को समझने का इशारा कर सामने की गली से जाता है। हीरालाल रिसीवर रखकर पांचू को आवाज़ देता है।) पांचू-पांचू (कमरे जाते हुए) मर गया साला भी नहीं सुनता।

[तेज़ी से कमरे जाता है। बन्नू ताला बन्द कर पीछे की गली से जाता है। हार्न की आवाज़ सुनाई देती है। कमरे से हीरालाल को लेकर जाती है।]

हीरालाल (आवाज) हुँह, ला न तो ज़हर कोई रोके है !

कमला : अब यही बाकी है !

हीरालाल मुझ डरवा रही है। मैं तो तुम्हें वर्षों से ज़हर मात दम रहा हूँ। यह शैतान बुन्दा न जाने कहाँ गायब है। (बाहर निकल आता है। साग-भाजी लिये पाँचू को आते देखकर)—यहां रहना था।

[हीरालाल तेज़ी से सामने की गली से जाता है। पाँचू मुंह बनाता अन्दर आता है। रोहित बस्ता लिये निकलता है। हाकर की आवाज़ आती है।]

हाकर 'ग़रीबी मिटाओ' आन्दोलन में पूँजीपतियों में खलबली। रूसी बच्चे चन्द्रलोक की यात्रा पर जाँयगे।

(साइकिल द्वारा 'हाकर' का प्रवेश)

पाँचू अख़बार अब लाये हो !

हाकर यहाँ के अखबारों में हड़ताल है। प्रभात जी के यहाँ बाहर से भी आता है।

(रोहित को अख़बार देता है। पाँचू अन्दर जाता है।)

रोहित यह ख़बर कहाँ है, जिसे आप कह रहे थे।

[हाकर इशारा कर साइकिल द्वारा पीछे की गली से निकल जाता है। रोहित ख़बर देखकर उत्सुकता में माँ को बताने दौड़ता है।]

रोहित : अम्मा !—अम्मा !

नीलिमा (प्रवेश के साथ) क्या है।

रोहित अम्मा रूसी बच्चे चन्द्रलोक की यात्रा पर जाँयगे। (पढ़ता है।) चन्द्रलोक की सूचना मिलने के बाद से रूसी जनता चन्द्रलोक की

यात्रा के लिए बेचैन हैं। १५ से २० वर्ष तक के बालक-युवकों ने चन्द्रलोक की यात्रा के लिए नाम लिखाये हैं। सड़कों पार्कों, खेतों-खलिहानों में लोग नारे लगाते घूम रहे हैं। 'चन्द्रलोक चला, चन्द्रलोक चला।' अम्मा हमारे देश के लोग कब तक चन्द्रमा तक पहुँचेंगे ?

नीलिमा : अभी हमारे देश को कई मंजिलें पार करनी हैं। अभी चाँद हमारी पहुँच के बाहर है।

[बातें करते हुए प्रभात पारस और मुन्नी का प्रवेश। नीलिमा और रोहित आगन्तुकों को देखने लगते हैं।]

मुन्नी पिता जी चन्द्रलोक में बच्चों को खाने को मिलेगा कि नहीं ?

पारस मुझे तो पहिले खाने की चिन्ता है। चाचा जी से पूछ।

प्रभात क्या पूछ रही हो मुन्नी ?

पारस यह पूछ रही है कि चन्द्रलोक में खाने को मिलेगा कि नहीं।

प्रभात : साथ ले जायेंगे। पिकनिक में ले जाते हैं कि नहीं।

नीलिमा (रोहित की ओर से) अभी यह भी पूछ रहे थे कि हमारे देश के लोग कब चन्द्रमा में पहुँचेंगे।

(प्रभात मेज ठीक करता है।)

पारस : (कुर्सी पर बैठते हुए) प्रभात जी, यह तो मानना ही पड़ेगा कि आधुनिक युग ने स्वतंत्र चिन्तन का

प्रारम्भ कर दिया है।

प्रभात यह क्यों नहीं कहते कि स्पुतनिक युग स्वतंत्र चिन्तन और संगठित श्रम शक्ति का फल है। नहीं तो युद्ध के पापक अणुशक्ति का उत्तमुखी विकास बाँधकर सारी दुनिया को नागासाकी और हिरोशिमा बनाने का स्वप्न देख रहे थे।

पारस : स्वप्न तो अब भी देख रहे हैं।

प्रभात लेकिन दुनिया के जनमत के आगे युद्ध के स्वप्न मालम्ने हो चुके हैं। (रुककर मुन्नी से) अरे ! तुम लोग यहाँ क्या सुन रहे हो। अब चन्द्रलोक की नहीं इस पृथ्वीलोक की बात हो रही है।

पारस : यह अभी इनकी बुद्धि के बाहर है।

प्रभात (रोहित से) *लिया जाओ मुन्ना को दूध पिलाओ*-पिलाओ और अपने डाक्टर चाचा को चाय नहीं पिलाओगे ?

(रोहित और मुन्नी अन्दर जाते हैं।)

पारस चाय पी चुका हूँ। और अब तो मौसम भी बदल गया है। ज्यादा चाय नहीं चलती। हाँ आज का अख़बार देखा ?

प्रभात : शीर्षक भर देखे हैं।

पारस : 'ग़रीबी मिटाओ' आन्दोलन यहाँ चल रहा है और प्रतिक्रिया कहाँ और हो रही है। (अखबार पढ़ता है) वाशिंगटन १८ जून। ग़रीबी

और बेकारी मिटाओ आन्दोलन से भारत में लगी विदेशी पूँजी को खतरा पैदा हो गया है।

प्रभात : हमारे देश में प्रजातंत्र के पुरोहित लोकतंत्र का गला घोटने के लिए लोकतंत्र को बचाने का स्वाँग भरते हैं।

पारस : अन-अलग़ीन पचवर्षीय योजनायें बड़ी-बड़ी तनख्वाहों और घुटालाकारियों के हवाले हो रही हैं। देश विदेशी कर्जों के बोझ से लदता जा रहा है।

प्रभात : यही सब वह काढ़ है जो देश की प्रगति पर दलदल की तरह बैठा है। अभी कुछ दिन हुए मेरे गाँव के एक मैट्रिक पास जवान को लेखपाल की नौकरी मिली तो तैनाती के पहिले वह मुकर गया था कि मैं घूस न लूँगा। लेकिन

पारस : फिर क्या उसने घूस ली ?

प्रभात : नहीं ! लेकिन उस पर घूस लेने का अभियोग लगाया गया।

पारस : क्यों ?

प्रभात : वह जिस इलाके में तैनात हुआ वहाँ के अधिकारी प्रति किसान से एक-एक दो-दो रुपया वसूल कर आपस में बाँट लेते थे। वह इस बँटवारे में न शामिल हुआ—घूस लेने वालों के लिए समस्या बन गया।

पारस : यह कहो कि घूस लेने वालों की लंका में विभीषण

अच्छा ।

कमला : (दुखी होकर) तो मैं दस रुपये के नौकर से भी गयी-बीती हूँ ।

मंजना : और अपने को क्या समझती है ।

कमला : अपने को समझती तो यह दिन न देखने को मिलता । तुझे समझती हूँ ।

मंजना : (बाल नोचकर) उजड्ड गँवार मुझे क्या समझती है ।

[झपट कर कमला के चोटा मारती है । दूसरा फिर मारना चाहती है, कमला चोर से पकड़ लेती है । मंजना गिरते-गिरते बचती है ।]

कमला : अबकी जो छुआ तो मार डालूँगी—चुड़ैल, मेरी जान लेने पर तुली है ।

मंजना : अच्छा तेरी यह हिम्मत !

[कमला के बाल पकड़ लेती है । शोर सुनकर अन्दर से नौमिया और पाँचू निकल आते हैं । पाँचू बीच-बचाव करता है । मंजना कमला को अन्दर धकेलती है । पाँचू छुड़ा कर अन्दर से द्वार बन्द कर लेता है । लड़ने की आवाज आती है । टेलीफोन की घंटी बजती है । पाँचू वापस आता है ।]

नौमिया : यह औरत क्या है ज़हर की पुड़िया है ।

पाँचू : (रिसीवर उठाकर, नौमिया से) बहूजी यहाँ बड़ी किल्लत है । जिसके मन की न कहा—उसके बुरे बना,—नहीं, नहीं बाबूजी आपके नहीं ये तो दुनिया का चलन है ।

मंजना : (तेज़ी से आकर) दो इधर ! किसका फ़ोन है ?

पाँचू : बाबूजी का पूछ रहे हैं।

अंजना : (रिसीवर कान में लगाकर) हलो! हलो! (रूमाल से पसीना पोछती हुई) जी, जी मैं अन्दर थी। हाँ बहूजी का बाबूजी समझ गया। पूरा गया है।

[अंजना कुर्सी पर बैठती है। पाँचू अन्दर जाता है। नीलिमा प्रभात की मेज साफ करती है।]

—हलो! बन्द कर दिया। हलो! आप कौन साहब हैं। किसको चाहते हैं। यह २३५४ नहीं है। रख दीजिये। जी ना, मैं अंजना बोल रही हूँ। जी आपने कह दिया कि फ़ोन रख दीजिये, नाक में गड़बड़ मचाये हैं। आप बदतमीज़ हैं। हाँ कोई बेवकूफ़ बीच में आ टपका था। हाँ, हाँ, वह तो अभी नहीं आये।—हलो! हलो! रख दिया।

[रिसीवर रख कर श्यामा की आवाज़ सुनने लगती है। बिना नम्बर मिलाये रिसीवर उठाकर कान में लगा लेती है।]

श्यामा (प्रवेश के साथ) मैं कोई झूठ बोलती हूँ। आओ दम आयी है। सराफ़ में भगदड़ मची है। पन्नू! पन्नू! (ताला बड़ा देखकर।) रोहित की अम्मा! ओ रोहित की अम्मा!

नीलिमा : क्या है श्यामा ?

श्यामा (चलते अन्दर करके) रोहित की नानी, कहा करता थो, अन्धेर नगरी अनबूझ राजा, टका सेर

माबी टका सेर खाजा। आज होती तो फिर कहती।

नीलिमा : (आँचल से आँखें पोंछती हुई) क्या हुआ।

श्यामा : कान में सुनो!

(नीलिमा के कान में कहती है। दोनों हंस पड़ती हैं।)

नीलिमा : हाँ, हाँ हाँ श्यामा यह बकवास तो नहीं!

श्यामा : बकवास नहीं! छोटी बहू के मालिश करने गयी थी। लाला-ललाइन असली लिये दीवार तोड़ रहे थे। मेरा भी न माना पूछ बैठी, ललाइन दीवार काहे तोड़ रही हो?

नीलिमा : क्या बोली ललाइन?

श्यामा : ललाइन तो चोर की तरह चौंक पड़ीं।

नीलिमा : (आगे खिसकते हुए) चोर की तरह चौंक पड़ीं?

श्यामा : हाँ लाला बोले राहिन की अम्मा कहते मुझे हंसी आ रही है।

नीलिमा : लाला क्या बोले?

श्यामा : लाला बोले, सोहन पद-यात्रा करने गया है, हम लोग घर में श्रमदान कर रहे हैं।

नीलिमा : यह घर लोगों को चौंचले हैं।

श्यामा : चौंचले नहीं। राहिन की अम्मा—लाला सने की ईंटें ला ला कर दीवार में लगा आते। ललाइन सीमेन्ट लगा रही थीं।

[बंजना बाल में रितीवर लगाये ध्यानकर देखती है। नीलिमा

श्यामा के दोनों कन्धे पकड़कर कान में कोई गुप्त बात कहती है।]

श्यामा : मैं अभी खबर करती हूँ। पन्नू आये तो कहना खबरदार रहे। मैं वहीं मिलूँगी।

(श्यामा पीछे की गली को जाती है।)

नीलिमा : तुम जल्द आना (क्षण भर रुक कर) ये भी न जाने कहाँ हैं।

[कुर्सी में बैठ कर कुछ पढ़ती है। अंजना श्यामा के जाते ही फ़ोन का नम्बर मिलाती है।]

अंजना (स्वगत) लाला-नन्दलाल आने का हूँ कह रहे थे। (फ़ोन नहीं मिलता। नाराज़ होकर रिसीवर रख देती है। नीलिमा अंजना की परेशानी ताकती नज़र आती है। अंजना इधर-उधर टहलती फिर फ़ोन मिलाती है। न मिलने पर पाँचू को आवाज़ देती है।) पाँचू, पाँचू, (पाँचू को देखते ही) फ़ोन ख़राब हो गया है। यहाँ देखना। मैं यहीं पास फ़ोन करने जाती हूँ।

[अंजना तेज़ी से उतर कर पीछे की गली को जाती है। पाँचू कान में रिसीवर लगाकर देखता है। सामने की गली से हीरालाल और गोपी को आते देखकर जल्दी से रिसीवर रखता है।)

हीरालाल किससे बातें कर रहा था।

पाँचू किसी से नहीं। बाबू जी फ़ोन ख़राब हो गया है। बहूजी पास के फ़ोन पर बात करने गयी हैं।

गोपी : फ़ोन ख़राब था। मैंने भी कई बार मिलाया। नहीं मिला तो पास के दफ़्तर जा रहा था।

तुम रास्ते में मिल गये। हाँ, तो क्या निश्चय हुआ, अभी बेच दिया जाय या और देखा जाय। अभी और बढ़ेगा?

हीरालाल : यह पूँजी का चमत्कार है गोपी! एक सौ चौबीस का सोना तीन सौ में आ रहा है। अब अधिक पैर फैलाने की जरूरत नहीं। ६ के १९ वसूल हो रहे हैं। इसी तरह भत्ते भी आते हैं। गोपी यह पूँजी का चमत्कार है।

गोपी : तो मैं बेचे देता हूँ।

हीरालाल : हाँ जाओ बेच दो।

[गोपी चौखट से सीमा पार कर सामने की गली से निकल जाता है। हीरालाल सम्भारी प्रसन्नता में डूबता है। सिगरेट सुलगाकर फूँक मारता है। पाँचू बाहर से कालीन साफ कर रहा है।]

हीरालाल : (स्वत:) ६ मास के १९ लाख हा हा हा हा अब मैं भी, सुरजमल, बालमियाँ और परनीपर की कतार में आ गया हूँ। अब बड़े-बड़े विद्वान, लेखक, मिनिस्टर तक इस साहूकार का सलाम बजाया करेंगे। हमारी पहिली क्रान्ति का नेता प्रजापाल जिन्दाबाद!

पाँचू : बाबूजी, यही दाढ़ीवाले प्रजापाल हैं? ये तो पहिले काँगरेस में थे।

हीरालाल : ये क्या! समाजवादी, कम्युनिस्ट सभी कांग्रेस में थे। सन् ४२ में सब अलग अलग हो गये।

पाँचू : मगर बाबू जी काँगरसी कहते हैं कि समाजवाद

हम लायेंगे।

हीरालाल : वे नक़लची हैं, वे क्या लायेंगे। असल तो ये हैं। य न होते तो अब तक आने कब कम्युनिस्ट कांग्रेसियों को खा जाते। कम्युनिस्ट बड़े खूनी होते हैं।

पाँचू लेकिन बाबू जी कम्युनिस्ट तो दुनियाँ में बढ़ रहे हैं।

हीरालाल (उत्तेजित होकर) बको नहीं! अपना काम करो! यहाँ मुहल्ले के लोगों से ज्यादा भले-मानस अच्छा नहीं। ये लाग—

(अन्दर जाता है। पाँचू स्वत धीरे से कहता है।)

पाँचू : ये लाग कम्युनिस्ट हैं।

हीरालाल (वापस आकर) जाओ टेलीफोन के दफ्तर, कहा टेलोफोन ठीक करें। वापसी में एक बोतल सोडा लेते आना। (चल देता है, मुड़कर) पाँचू पहिले सोडा द आना।

[हीरालाल अन्दर जाता है। सामने की गली से चन्दू का प्रवेश]

चन्दू : (ताला बन्द देखकर, पाँचू से) दादा श्यामा का कुछ पता है।

पाँचू (बीमे से उतरकर धीरे-धीरे) किसी का दीवार में सोने की ईंटे दबाते देख आयी थी। रोहित की अम्मा स पूछ ला, इनको सब मालूम है। हम

हीरालाल : हमारे गले में तो कानूनी तलवार बाँधी जा रही है। और आपको सट्टेबाजों की करतूत दिखाई देती है। आप हमेशा ऊट-पटाँग बातें करते हैं।

प्रभात : ये ऊट-पटाँग बातें नहीं हैं हीरालाल जी। चाँदी-सोने का संकट पैदा कर देश में अन्न-संकट को न्योता दिया जा रहा है। हमारे देश का निर्माण और प्रगति रोकने के लिए यह भयानक षड्यंत्र है।

हीरालाल : यह सब कम्युनिस्टों की-सी बातें हैं। देश में बड़े बड़े निर्माण-कार्य हो रहे हैं।

प्रभात : और कर्ज़ों के बोझ से देश की कमर टूट रही है। जिधर देखो, बेकारों और भिखमंगों की पल्टनें नज़र आ रही हैं।

हीरालाल : (पिस्तौल खाली करते हुए) आपको तो चारों तरफ भिखमंगे नज़र आते हैं।

प्रभात : भिखमंगे बनाने वाले और उनके चाकर दिखाई देते हैं, जो दान की महत्ता का बखान करते नहीं थकते। सेठ जी बड़े दानी हैं। हरिश्चन्द्र के अवतार हैं। बड़ी-बड़ी मिलें हैं, जहाँ मज़दूरों की हड्डियों का रस निचोड़ कर सोना जमाया जाता है। और दूसरी ओर धर्मात्मा बनने के लिए प्रदर्शन किया जाता है।

हीरालाल : मि प्रभात ये पूँजीपति न होते तो यह रेल, तार, डाक और बड़े-बड़े उद्योग-धन्धों का कहीं पता न होता।

प्रभात यह सब मजदूरों की मेहनत का फल है। मजदूर न होते तो—

हीरालाल यह मन समझाने की बात है। यदि पूँजी-पतियों के पास दया न होती तो यह लाखों करोड़ों आदमी नाली के कीड़ों की तरह बिलबिला कर मर जाते। आप उन्हीं पूँजीपतियों की बुराई करते हैं। उन्हें दुनिया से मिटा देना चाहते हैं। कितने ही अनाथालय, गोशालायें, विधवा-आश्रम और लाखों स्कूल इन्हीं पूँजीपतियों की बदौलत चल रहे हैं।

प्रभात : जिनमें वह शिक्षा दी जाती है जो रेशमी लिबास में प्लेग के कीड़े पालती है। लड़कियों का मनोरञ्जन का साधन और लड़कों को क्लर्क बनाती है। यह पूँजीवादी अर्थनीति का ही नतीजा है कि उच्च शिक्षा इतनी मँहगी है कि अच्छे प्रतिभाशाली बालक साक्षरता का ताप लेकर बेकारी के शिकार होते रहते हैं। धनियों के बेटे ऊँचे-ऊँचे पदों पर कब्जा करते हैं। यह वर्गीय व्यवस्था नहीं तो और क्या है। हीरालाल जी ज़रा गौर करके अपनी तस्वीर तो देखिये।

हीरालाल : सम्भीर देखें, अपनी या आपकी । मुझे तो दोनों में एक ही बात नज़र आती है ।

प्रभात : लेकिन दोनों के स्वार्थ अलग-अलग हैं ।

हीरालाल : तो आप समझते हैं कि हम अपने स्वार्थ छोड़ कर सह अस्तित्व का पूजा करेंगे ।

प्रभात : जिसे युग ने पूजा है, उसे आप पूजें न पूजें, मानें न मानें कुछ नहीं आता-जाता । युग की सचाई गले तक आ गयी है ।

हीरालाल : आपको साम्यवादी रोग हो गया है । आप नहीं समझते कि हम लोग किस प्रकार देश में नयी सभ्यता को जन्म दे रहे हैं ।

प्रभात जो अपने ही हाथों अपनी कब्र खोद चुकी है ।

नीलिमा आओ चलो ।

प्रभात चलो !

[थोड़ा द्वार पर खड़ा हुआ रहा था, मगर सरक जाता है । प्रभात हीरालाल को घूरता नीलिमा के पीछे जाता है । हीरालाल रिसीवर उठाकर नम्बर मिलाता है । सामने की गली से अंजना आती है ।]

अंजना : कोई फोन ठीक काम नहीं कर रहे । टेलीफोन-कर्मचारियों में गड़बड़ है । लोग परेशान हैं ।

हीरालाल : (नम्बर मिलाकर) हलो ! हलो ! मिल गया, कौन है ? हाँ, गोपी बाबू को फोन दो ! हलो ! हलो गोपी बाबू, क्या है ! हाँ ! हाँ ! यह तो होना ही

है । भाव क्या है । हाँ, हाँ (उछल कर) एकदम डाउन मत्तरसे नब्बे तक—हाँ हाँ तुम खरीद लो। मैं इधर सौदा तय किये लेता हूँ (रिसीवर रखकर प्रभात से) भाभी तुम्हें अभी आना है ।

[हीरालाल के साथ प्रभात अन्दर जाती है । सामने की गली से साइकिल द्वारा शेखर आता है । साइकिल खड़ी कर प्रभात के द्वार पर आकर आवाज देता है ।]

शेखर : प्रभात जी ! प्रभात जी !

प्रभात : भाजन कर रहा हूँ रुकिये !

शेखर : (स्वगत) रुकना पड़ेगा अवश्य !

[सामने की गली से लपकते हुए मुकुन्द का प्रवेश । शेखर कुर्सी में बैठता है]

मुकुन्द : (अपने पीछे एक अपने आदमी से कह रहा हो) हम सब जानते हैं । यह सब सट्टे वालों की तिकड़म है । (कोने पर बढ़ते हुए) मार पापाडन्डा मचा रखा है । सुना है सरकार सोने चाँदी पै कब्जा कर रही है ।

शेखर : सोना-चाँदी गायब कर देश में अन्न-संकट पैदा करने की पूँजीवादी नेताओं की चाल है । यहाँ की असेम्बली में आज एक प्रस्ताव पेश किया गया था ।

प्रभात : (प्रवेश के साथ) कैसा प्रस्ताव !

शेखर : कि सरकार सोने चाँदी के बाजार पर कब्जा कर ले ।

प्रभात : किस बेवकूफ ने इस तरह का प्रस्ताव पेश किया ।

और उसे इजाज़त कैसे मिल गयी।

शेखर : अभी पता नहीं चला। आइये चलें।

[दोनों पीछे की गली को चले जाते हैं। आवाज सुनकर अन्दर से हीरालाल आता है। जाने के झोंक में गली की ओर झाँककर देखता है।]

हीरालाल : (मुकुन्द से) यहाँ खड़े-खड़े किसकी बातें सुन रहे थे।

मुकुन्द : ठेरर जी ठट्टेबाजों की बातें क्या रहे थे। हम सुन रहे थे। आओ बैठो। आपकी बाबू जी प्रिये-प्यारे लटे हैं।

[अन्दर जाने लगता है कि झुनझुनी की आवाज़ आते ही वापस आता है। ढ़ी लाल शीशे में गिलास खाली कर मेज पर रखकर जाते हुए झुग्गी वाले को देखता है। सुरेश झुनझुनी बजाता है और प्रकाश के चबूतर पर खड़ा होकर बोलता है। भीड़ लग जाती है।]

सुरेश : भाइयो! हमारे देशव्यापी बेकारी और गरीबी मिटाओ आन्दोलन से भयभीत होकर पूँजीपतियों ने भारत में लगी अपनी पूँजी उठाने की धमकी दी है। विदेशी पूँजीपतियों की मंशा है कि देश का आर्थिक ढाँचा चूर चूर हो जाय। सोने चाँदी का संकट अन्न और कपड़े का संकट पैदा कर दें। सरकार हाथ पर हाथ रखे बैठी है। सोने-चाँदी के बाजार में लाखों के वारे-न्यारे हो रहे हैं! रेल, डाक, तार, टेलीफोन के कर्मचारियों ने इस आत्मघातों के विरुद्ध हड़ताल कर दी है। सभा में आइए और देशद्रोहियों का उनकी साजिश का

उत्तर दीजिये।

(सुरेश डुगडुगी पीटता पीछे की गली से आता है।)

हीरालाल : (चौंककर) यह सरकारी एजेन्ट है। यह सरकारी एजेन्ट है।

(भीड़ के लोग ठहाका मार कर हँसते हैं।)

आदमी गिरिये नहीं, गिलास सँभालिये। बाबूजी यहाँ मद्य निषेध है।

[सारी भीड़ निकल जाती है। हीरालाल रिसीवर उठाकर कुर्सी से गिर पड़ता है। घबराया हुआ उठकर रिसीवर कान में लगाकर]

हीरालाल : रेल-बैंक, पोस्ट-टेलीफोन हलो! हलो! करेन्ट नहीं। अब क्या होगा। (रिसीवर पटक कर) पाँचू-पाँचू, अबे मर गया! मुकुन्द! मुकुन्द!

[दोनों अन्दर से भागकर आते हैं। हीरालाल लड़खड़ाता हुआ सेबी में बोने से लटकता है। पाँचू आकर हीरालाल को सँभालता है।]

पाँचू क्या हुआ बाबूजी!

हीरालाल हुआ नहीं होने का डर है। आओ मेरे साथ चलो। मजदूरों ने हड़ताल कर दी है।

मुकुन्द : चलो! यहाँ भाभी थे न जाने क्या हो गया है।

[तीनों सामने की गली से जाते हैं। द्वार की आवाज सुनाई देती है। नीलिमा द्वार पर खड़ी सारा व्यापार देखती रहती है। पीछे की गली से प्रभात आता है।]

प्रभात कैसे खड़ी हो?

नीलिमा : हीरालाल पागलों की तरह चिल्लाता, गिरता-पड़ता इधर गया है।

प्रभात : पाप उसके सर पर चढ़कर बोल रहा है। (बाहर जाते हुए) तुम अभी जाके रोहित को लिवा लाओ। शहर में गड़बड़ी शुरू हो चुकी है। लड़ने का अन्देशा है।

[आगे प्रभात और पीछे नीलिमा दोनों अन्दर जाते हैं। अन्दर कमला सपना का सिंगार किये बाहर की तोरना से अन्दर से आती है। हार पकड़कर अट्टहास करती है।]

कमला : हाहा हाहा बस थोड़ी देर की मेहमान है दुनिया। (कुर्सी से बैठकर टेलीफ़ोन उठाती है, करती है।) अब डर किस बात का। शामा कुछ खा-के नहीं गया। शाम होने को आयी। अब वह मेरे सामने न आयगी। सब बेकार है। मरने वाले के लिए दुनिया कुछ नहीं है।

[हाहा हाहा—करती भीड़ में जोर से द्वार बन्द कर अन्दर से जंजीर चढ़ा लेती है। नीलिमा झपट कर आती है। कमला को अन्दर जाते द्वार बन्द करते देखती है। प्रभात बाहर जाने के लिए आता है।]

प्रभात : कौन था।

नीलिमा : कमला का न जाने क्या हो गया है। के। बातें कर रही थी। सुहाग के कपड़े पहिने आर म द्वार बन्द कर अन्दर चली गयी है।

प्रभात : होगा कुछ। तुम रोहित को लिवा लाओ।

[पीछे को चली है दोनों कमरों में बस्ता लटकाये १० १२ वर्ष के बालक का प्रवेश।]

बालक : यह रोहित का बस्ता लो।

प्रभात रोहित कहाँ रह गया।

बालक रोहित को बुखार है। गान्धी पार्क की बेंच पर पड़ा है।

नीलिमा हाय मेरा लाल कहाँ है।

(झपट कर जाना चाहती है।)

प्रभात तुम यहीं रहो मैं लिये आता हूँ।

[लड़के के साथ पीछे की गली को जाता है। नीलिमा छटपटा रही है। कमरे से बस्ती में खटोला लाकर बिछाती है। एकाएक मीलों की सीटियाँ बज उठती हैं। संध्या घुमड़ती आती है। तूफान के पहिले की स्थिति दिखाई देती है। एकाएक हजारों आदमियों के स्वर सुनाई देते हैं। अब मनमानी—नहीं चलेगी, नहीं चलेगी। पीछे की गली से हलचल-भरे मजदूर सामने की गली को जाते हैं, नीलिमा संशय में है। रोहित को कन्धे से लगाये प्रभात उसी लड़के के साथ आता है। नीलिमा रोहित को लेने के लिए बढ़ती है।]

नीलिमा क्या हुआ मेरे लाल का।

प्रभात मैं लिटाता हूँ। तुम फूल का बर्तन और कपड़ा भिगाकर लाओ। रोहित को तेज बुखार है।

[नीलिमा कमरे से सामान लाती है। प्रभात रोहित को लिटाता है। सामने की गली से एक आदमी तेजी से पीछे की गली को खिसकता हुआ जाता है। नीलिमा रोहित की पट्टियों में फूल का बर्तन रखती है, प्रभात माथे पर भिगो कर कपड़ा रखता है।]

आदमी रेल, बैंक, टेलीफोन, हवाई-सर्विस पर मजदूरों ने शान्तिपूर्ण घेरा डाल दिया है। पुलिस-अधिकारियों और सिपाहियों में खींच-तान हो रही है।

तुम्हारी बढ़ती हुई आबादियों का स्वागत करने को उत्सुक हैं। धरती पर लड़ाई छेड़ने वालों को व्योम का विधान नक्षत्रों में लड़ने के लिए मजबूर कर चुका है। (यकायक रोहित पर दृष्टि पड़ती है। यथार्थ सामने आ जाता है।) लेकिन (ओर बैठ कर हिलाकर) इस बदद ज़माने को बदलते-बदलते अभी कितनी कलियाँ मुरझा जायेंगी। कितने कुसुम कुम्हला जायेंगे। और यह महानाश की भट्ठी बुझने के पहले न जाने भविष्य की कितनी उज्ज्वल आशाओं को खाक कर डालेगा (रुक कर) पैसा, पैसा आदमी का नहीं—पैसे का दोस्त है। सबसे ऊपर भगवान से भी ऊपर है। हुँ! तुम विद्यार्थी हो! जानते हो एक दिन पैसा मर जायगा। श्रम की पूजा होगी श्रम का राज्य होगा। (नीलिमा दरवाजे में से आती है। नीलिमा को देख कर) नीलिमा! अब यह व्यवस्था नहीं चल सकती है। रोहित पढ़ेगा लिखेगा और नयी दुनिया का सारथी बनेगा।

[रोहित उठकर बैठ जाता है। नीलिमा अन्दर आकर लालटेन रखती है। पूर्ववत् सुमन को [illegible] है, [illegible] रहती है। पशुओं की आवाज़ें आती हैं। कोलाहल सुनाई देता है। सामने की गली से श्यामा भागती आती है।]

श्यामा : ममात जी, ममात जी, जल्द चलिये, दुश्मन

शान्ति भंग करने के लिए संगठित हो रहे हैं ।
जनता जमा है ।

प्रभात नीलिमा (लालटेन लिये आती नीलिमा से) रोहित को देखना, मैं आता हूँ । (रोहित से) आऊँ बेटा ?

रोहित आओ पिता जी !

[रोहित उठकर बैठ जाता है । प्रभात तेजी में श्यामा के साथ पीछे की गली से जाता है । सामने की गली में कार रुकने की आवाज आती है । हीरालाल, गोपी, मुकुटबिहारी तीनों घबराये हुए आते हैं । हीरालाल लिये हैं । बगल में बोतल दाबे हैं । गले में प्रभापाल का चित्र लटकाये हैं ।]

हीरालाल : (सीने पर चढ़ाते हुए) खतरे से निकल आये ! अब डरने की जरूरत नहीं ।—(तीनों कुर्सियों पर बैठते हैं ।)

गोपी हाँ डरने की जरूरत तो नहीं है, लेकिन प्रति-क्रिया तो होगी, उसके लिए क्या बन्दोबस्त है ।

हीरालाल : अहा हा हा—प्रति-क्रिया को समय न मिलेगा । चौबीस घंटे भी बाजार ठप्प रहा—तो देखना ! इन हो-हल्ला करने वालों की हुलिया बैरंग हो जायगी । लोग भूखों मर जायेंगे । (प्रभापाल का चित्र हाथ में लेकर) अब इनकी सरकार होगी । हमारा नेता जिन्दाबाद ! (उछलकर चूम कर) पौंचू ! पौंचू !

मुकुटबिहारी : पौंचू तो उन लोगों के साथ है ।

हीरालाल तो बाबा जी आपही अन्दर से गिलास ला

लीजिये।

[मुकुटबिहारी द्वार ठेलता है। कमला को आवाज़ देता है।]

कमला ! कमला ! न जाने क्या कर रही है।

हीरालाल उठकर ज़ोर से द्वार पर धक्का देता है। (द्वार न खुलने पर, बोतल खोलकर) मर गयी, न खोले (बोतल मुंह में लगाकर घट घट शराब पीता है।)

ला तुम भी ऐसे ही पियो।

[तीनों बोतल से ही पीते हैं। बाहर शोर बढ़ रहा है। सामने की गली से लोग भागते हुए पीछे की गली में चले हो जाते हैं।]

आदमी-१ कुछ बस नहीं चला तो मीटिंग में तोड़-फोड़ करते हैं।

आदमी-२ मालिकों के ज़र-ख़रीद गुण्डे हैं। छुरा किसके लगा है ?

आदमी १ : मालूम नहीं, कोई मज़दूर है।

आदमी-२ : चन्दू तो नहीं है। मालिक उस पर बुरी तरह खैर है।

आदमी १ : चन्दू नहीं है। पर है कोई मिल-मज़दूर। मज़दूर उसे अस्पताल ले गये हैं।

(तीसरे आदमी के आते ही तीनों गली से निकल जाते हैं।)

हीरालाल (सिगरेट सुलगाते हुए) सुना गोपी बाबू यह लोग क्या कह रहे थे।

गोपी : यह तो सब ठीक हो रहा है। ल-लेकिन यह बनाया—नुकसान हुआ कि नहीं।

हीरालाल : भुगतान की चिन्ता न करो गोपी। पूँजी का चमत्कार देखो। लो और पियो।

गोपी : यह न हो कि हम पीते ही रहें और बड़ी-बड़ी मछलियाँ—इस अन्धड़ में हमें निगल जाँय।

हीरालाल : तो तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं है।

गोपी : विश्वास तो मुझे अपने रुपये का भी नहीं है।

[सामने की गली में पकड़ो-पकड़ो का शोर सुनाई देता है। मौलिमा रोहित के पास परेशान सी बैठी है। बीच-बीच में उठ कर इधर-उधर देखती है। सूर्यास्त हो चुका है। बत्तियाँ जल चुकी हैं। हीरालाल बत्ती जलाता है। सामने की गली से चमचमाता हुआ छुरा लिये एक गुण्डा तेज़ी में भाग कर पीछे की गली को जाता है। कुछ लोग उसका पीछा किये हैं। दो सिपाही डण्डा लिये भागते जाते हैं।]

मुकुन्दबिहारी : (भागते हुए आदमी से) सभा भंग हो गयी कि नहीं?

आदमी : (गुस्से के साथ ऊपर देखता हुआ) सभा भंग करने वालों की शामत भर गयी। अब आगे राह नहीं मिल रही। पुलिस के सिपाही जनता का साथ दे रहे हैं।

[आदमी गली से जाता है। हीरालाल उद्विग्न हो उठता है। सर के बाल नोचना रगड़ने लगता है।]

हीरालाल : पुलिस के सिपाही मज़दूरों से मिल गये।

गोपी : पानी ढाल को ही जाता है।

मुकुन्दबिहारी : समस्या कठिन हो गयी।

(हाँफते हुए बाँके का प्रवेश)

पाँचू बाबू जी बाबू जी—यह नेता जी आये थे। नई बहू को गाड़ी-समेत दिल्ली ले गये। मुकुन्द बाबू को पुलिस ने पकड़ लिया है। स्टेशन वाले माल पर पुलिस कब्जा किये है।

गोपा स्टेशन वाले माल पर पुलिस का कब्जा है! हीरालाल मैं क्या करता था।

हीरालाल चुप रहो! (मुकुटबिहारी के कन्धे झकझोर कर) बोलो अंजना कहाँ है! (गले में पड़े प्रधानमंत्री के चित्र को टुकड़े-टुकड़े करते हुए) आया—दिल्ली नहीं अमेरिका। हम तुम्हें यहाँ आकर पकड़ेंगे।

मकुटबिहारी अब यहाँ रुकना ठीक नहीं है।

गोपी : (तड़प कर) आया अमेरिका आया! दुष्ट! तुम राष्ट्रीय पूँजी चिर्कियों का साँप बनना चाहते थे। मैंने कहा था कि मुझे आपने गोरे का भी विश्वास नहीं। आप तुम अवदमी पड़ी-पड़ी विदेशी सम्पत्तियों के मुँह में पारा डाल रहे थे। नमस्कार है आप लोगों का।

(तेजी में लड़खड़ाता जीना पार कर जाता है।)

हीरालाल (जोर से) गोपा, गोपा बाबू—

[बाहर की आवाज आती है। प्रमाण तर में नहीं बाँधे डाक्टर चारन के साथ आता है। हाथ में रोहित को दवा लिये है। नौलिका को दीदी देता है। रोहित उठकर बैठ जाता है। मोती और मुकुटबिहारी सर पकड़ कर बैठे हैं।]

राजिंदर : क्या लगा पिता जी—

प्रभात पत्थर लग गया था। मीटिंग पर गुण्डों ने हमला कर दिया था।

पारस ये सब मिल-मालिकों के लड़के थे। यह सब एक्शन-कमेटी में शामिल हैं।

(सादा लिबास में शेखर का प्रवेश)

शेखर अभी एक उच्च अधिकारी पकड़ा गया है। उसके पास कुछ कागज़ात बरामद हुए हैं। यह जो कुछ हुआ है सरकार उलटने का षड्यंत्र था।

पारस : यह बिल्कुल गलत तरीका है।

प्रभात लेकिन अब कोई इन अपराधियों को नहीं बचा सकता।

हीरालाल : यह पूँजी का चमत्कार है।

प्रभात यह पूँजी का चमत्कार नहीं जागी हुई ज़िन्दगी का चमत्कार है।

[नारों की आवाज़ और क़रीब आती जाती है। सामने की गली से शोभा आती है। ऊपर जाकर द्वार खोलती है। द्वार नहीं खुलता। हीरालाल और मुकुटबिहारी की ओर घूर कर देखती है। फिर द्वार भड़भड़ाती है।]

शोभा भाभी-भाभी—भा-भाभी ! कोई नहीं बोलता (एकाएक ज़ोर लगाने पर द्वार खुल जाता है। शोभा अन्दर जाती है। भीषण चीत्कार कर उठती है।) भाभी यह तुमने क्या कर लिया ? (बाहर भाग कर आती है।) भइया—भाभी ने फाँसी लगा ली।

हीरालाल : अच्छा हुआ !

(प्रभात आदि सब खौफ़ से सुनते हैं)

शोभा : भइया तुम अपनी अदालत के आगे उसे न समझ सके। वह अपनी ज़िन्दगी भी न जी सकी।

हीरालाल : तो क्या मैंने मार डाला।

शोभा : हाँ तुमने मार डाला। बेचारी ज़िन्दगी भर बच्चे का मुँह देखने को तरसती रही। तुम अपनी बदज़ात आदतों से बाज़ न आये। संविधान में औरत को जगह मिली लेकिन आदमी उसे जानवर समझता रहा। एक अपढ़ गँवार भारतीय नारी अपने हाथों माँग में सिन्दूर भरकर मौत की गोद में सो गयी। हा हा हा हा— आओ अब उसकी सुहाग की साड़ी भी उतार लो, अंजना के काम आयेगी। हा हा हा हा

[सीढ़ी में खटर होती है। सामने की गली से मुकुन्द को पकड़े पुलिस आती है। प्रभात और पारस चुप-चुप बातें करते हैं। हीरालाल और मुरलीबिहारी भागने की चेष्टा करते हैं।]

मुकुन्द : भाड़ा भरो। दुराग्रह तुमने किया है, मगर हम भ रहे हैं। इनको भी इन्हें पकड़ लो।

(खटर से शोभा का प्रवेश)

शोभा : मुकुन्द भाभी ने फाँसी लगा ली।

मुकुन्द : भाभी ने फाँसी लगा ली!

[पुलिस हीरालाल और मुकुन्दबिहारी को गिरफ्तार करती है। मुकुन्द और शोभा रमना की लाश उठा कर लाते हैं। सामने की गली से गाते हुए लोग पीछे की गली को जाते हैं। बच्चू और श्यामा झण्डे लिए हुए लोगों की अगुवाई कर रहे हैं।]

शक्ति के लिए बढ़ा
मुक्ति के लिए लड़ा
विश्व क्रान्ति शान्ति के—
लिए मनुष्य एक हो
चला चला चल चल चला।

(प्रसन्न पारस आदि जुलूस के साथ हो जाते हैं)

मुकुन्द : (जोरदार से) लड़ाका-लड़ाका इन्हें-भाई नहीं ये वर्ग के दुश्मन हैं।

[परदा गिरता है]